नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

www.newsparivahan.com

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 379, नई दिल्ली,गुरुवार 19 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

● 03 माता दुर्गा को समर्पित 9 दिन बेहद कल्याणकारी
● 06 सत्य की यात्रा
● 08 एक शाम श्री मायली माताजी के नाम विशाल भव्य जागरण 25 मार्च को

मुख्य संपादक का तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह के लिए ऐतिहासिक निमंत्रण

केंद्रीय मंत्री से सौजन्य भेंट

परिवहन विशेष न्यूज

तैयारियां जोरों पर परिवहन विशेष समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह की तैयारियां पूरे जोश के साथ चल रही हैं। आज मुख्य संपादक संजय कुमार बाठला, सह-संपादक पिंकी कुंडू, सोबरन सिंह राजपूत और आर के राजपूत ने श्री बी.एल. वर्मा, केंद्रीय राज्य मंत्री (उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण और सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय) से सौजन्य भेंट की। यह भेंट न केवल समारोह के प्रति उत्साह का प्रतीक है, बल्कि परिवहन क्षेत्र के योगदान को राष्ट्रीय पटल पर उजागर करने का संकल्प भी दर्शाती है।

समारोह के उद्देश्य और कार्यक्रम पर गहन चर्चा इस अवसर पर मुख्य संपादक ने समारोह के प्रमुख उद्देश्यों, विस्तृत कार्यक्रम तथा परिवहन क्षेत्र के बहुआयामी योगदान पर विस्तृत चर्चा की।

उद्देश्यः परिवहन क्षेत्र के उन वीरों को सम्मानित करना जो सड़क सुरक्षा, प्रदूषण नियंत्रण और नीतिगत सुधारों में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

कार्यक्रमः पुरस्कार वितरण, विशेषज्ञों के व्याख्यान, नीति चर्चा सत्र और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां।

परिवहनयोगदानः शहरी गतिशीलता, सार्वजनिक परिवहन सुधार और पर्यावरण संरक्षण में क्षेत्रकी उपलब्धियां।

यह समारोह परिवहन नीति के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित होगा, जो सभी हितधारकों को एक मंच पर लाएगा।

दिल्ली की बेटी रितु मदानः वुशु विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक से भारत का परचम लहराया

संजय कुमार बाठला

एथेंस में ऐतिहासिक उपलब्धियूरोप के एथेंस में आयोजित वुशु विश्व चैंपियनशिप के अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में दिल्ली की बेटी

रितु मदान ने कांस्य पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया। इस उपलब्धि ने न केवल दिल्ली, बल्कि पूरे भारत का गौरव बढ़ाया। पिछड़े समाज की इस बेटी ने कठिन चुनौतियों को पार कर विश्व पटल पर तिरंगा फहराया।

संघर्षों से जूझती बेटी का विजयी सफर

पिछड़े समाज की प्रेरणाः रितु ने सामाजिक-आर्थिक बाधाओं के बावजूद कड़ी मेहनत से यह मुकाबला जीता, जो लाखों युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है।

राष्ट्रीय गौरव की नई मिसालः विश्व चैंपियनशिप में पदक जीतकर उसने भारत की खेल क्षमता को वैश्विक स्तर पर सिद्ध किया।

महिलाओं की सशक्तिकरण यात्राः यह सफलता ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों की बेटियों को साबित करती है कि सपने कोई भी हासिल कर सकता है।

इस बेटी की जितनी प्रशंसा की जाए, उतनी कम होगी। मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई कि उसके सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आशीर्वाद देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। रितु जैसी प्रतिभाओं से देश का भविष्य उज्ज्वल है।

आगे की राहः खेल नीतियों में बदलाव की जरूरत रितु की सफलता हमें याद दिलाती है कि सरकार और समाज को पिछड़े वर्गों के युवाओं को अधिक अवसर देने चाहिए। खेल सुविधाओं का विस्तार और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को मजबूत करना आवश्यक है, ताकि ऐसे और चैंपियन जन्म लें।

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करे, यह बिल्कुल निशुल्क है,
अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करे
https://www.newsparivahan.com/chief-editor/https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा
के जनहित कार्यों को समर्पित

20 सड़क सुरक्षा
महिला सुरक्षा
प्रदूषण
साइबर अपराध

अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है,
तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुलक आवेदन करें।

दिनांक: 29 मार्च (रविवार) समय - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
स्थान - कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001

आवेदन प्रक्रिया
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGY2Cw9
मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

RNI No. RNI No :- DELHIN/2023/86499
परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
India's First Leading English Transport Newspaper
parivahanvishesh

आरएनआई द्वारा दो भाषाओं में अनुमोदित, प्रकाशित समाचार पत्र "परिवहन विशेष" वार्षिक समारोह

दिनांक:- 29 मार्च , स्थान:- मावलंकर हाल, कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, समय:- 1 बजे से 5 बजे

परिवहन विशेष : हिन्दी एवं इंग्लिश भाषा दैनिक समाचार पत्र आपको अपने तृतीय वार्षिक समारोह में सम्मान पूर्वक शामिल होने के लिए निमंत्रित करता है
इस वर्ष का वार्षिक समारोह मुख्य रुप से "सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा" को समर्पित है।

मुख्य विशेषता :

1. विशेषज्ञों द्वारा जानने का प्रयास की भारत सरकार द्वारा देश में सख्त कानून लागू करने के बाद भी बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और सड़को पर उपलब्ध जाम का मुख्य कारण और उससे छुटकारा पाने के लिए क्या नीतियां अनिवार्य,
2. सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया, एनजीटी, वायु गुणवत्ता आयोग एवं सरकारों द्वारा नए नए दिशा निर्देशों, आदेशों के बाद भी प्रदूषण नियंत्रण होने के स्थान पर बढ़ता जा रहा है उससे निजात पाने के लिए जाएंगे इस समारोह में विशेषज्ञों से उनके विचार
3. डिजिटल इंडिया की तरफ बढ़ते भारत में बढ़ते साइबर क्राइम से कैसे बचा जा सकता है इसपर पूर्ण चर्चा एवम् विशेषज्ञों की राय
4. भारत दश में नए कानूनों के बावजूद महिलाओं पर अत्याचार और गुमशुदगी पर गहन चिंतन और विशेषज्ञों के विचार

इस समारोह में भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों पर जानकारी प्राप्त कर समाचार पत्रों द्वारा जनहित में जनता को सचेत करने और उससे जनता की सुरक्षा संभव के लिए *"परिवहन विशेष" " समर्पित एवं पूर्ण रुप से प्रयासरत रहेगा। इस उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए इस वर्ष का वार्षिक समारोह ज्वलंतशील मुद्दों को समर्पित किया गया है। इस समारोह में भारत देश से विशेषज्ञों के साथ - साथ हमारा प्रयास भारत सरकार के माननीय गणमान्य कैबिनेट एवं राज्य स्तरीय मंत्रियों की गरिमा पूर्ण उपस्थिति और उनके विचार जनहित में मुख्य बिंदुओं में रहेगा।

इस समारोह में भारत देश में जनहित में इन कार्यों को करने में पूर्ण निष्ठा से सलग्न "सामाजिक कार्यकर्ताओं और कार्यरत समूहों (एनजीओ, ट्रस्ट एवं एसोसिएशन) को पुरस्कार" देकर सम्मानित किया जाएगा।

आपकी उपस्थिति हमारा गर्व

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

हृदयाघात के संभावित कारण: डॉ. चंद्रशेखर पाखमोडे का मामला — एक गहन विश्लेषण

31 दिसंबर 2025 को नागपुर के प्रख्यात 53 वर्षीय न्यूरोसर्जन डॉ. चंद्रशेखर पाखमोडे का आकस्मिक निधन एक मासिव (Massive) हार्ट अटैक (मायोकार्डियल इन्फार्क्शन) के कारण हुआ। यह हृदयाघात हृदय की एक प्रमुख कोरोनरी धमनी—संभावित रूप से लेफ्ट एंटीरियर डिसेंडिंग (LAD) आर्टरी, जिसे आम भाषा में "विडो-मेकर" कहा जाता है—के अचानक पूर्ण अवरोध से हुआ। इसके परिणामस्वरूप हृदय की मांसपेशियों को तीव्र क्षति, घातक अरिदमिया और अचानक कार्डियक अरेस्ट हुआ, जिसे आपातकालीन उपचार भी रोक नहीं सका।

सबसे चौंकाने वाला तथ्य यह रहा कि मृत्यु से मात्र तीन दिन पहले किया गया ECG पूरी तरह सामान्य था, और वे एक फिटनेस-कॉन्शस, सक्रिय तथा अनुशासित जीवनशैली वाले व्यक्ति माने जाते थे। न तो मधुमेह, न ही अत्यधिक कोलेस्ट्रॉल जैसे स्पष्ट जोखिम कारक सामने आए। इसके बावजूद इस प्रकार की घटना यह दर्शाती है कि हृदय रोग कितना मौन और अप्रत्याशित हो सकता है।

1. साइलेंट कोरोनरी आर्टरी डिज़ीज़ और प्लाक रप्चर

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, ECG केवल हृदय की विद्युत गतिविधि को दर्शाता है, यह धमनियों में जमी चर्बी (प्लाक) या उनके अस्थिर होने का पता नहीं लगाता।

बहुत-से मामलों में धमनियों में वर्षों से जमा साइलेंट प्लाक अचानक फट जाता है, जिससे खून का थक्का (क्लॉट) बनकर धमनी को पूरी तरह बंद कर देता है।

भारत में, विशेषकर मध्यम आयु वर्ग के पुरुषों में, जेनेटिक प्रवृत्ति और जीवनशैली के कारण CAD की घटनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं—भले ही व्यक्ति बाहर से स्वस्थ दिखे।

2. दीर्घकालिक तनाव और प्रोफेशनल बर्नआउट

एक न्यूरोसर्जन का जीवन अत्यधिक मानसिक दबाव, लंबे ऑपरेशन (अक्सर 12–16 घंटे), अनियमित नींद और जीवन-मृत्यु से जुड़े निर्णयों से भरा होता है।

लगातार तनाव से शरीर में कॉर्टिसोल और एड्रेनालिन जैसे हार्मोन बढ़ते हैं, जोः

रक्तचाप और हृदयगति को बढ़ाते हैं

धमनियों में सूजन और प्लाक अस्थिरता को तेज करते हैं

हृदयाघात की संभावना कई गुना बढ़ा देते हैं

नवीन अध्ययनों के अनुसार, अत्यधिक तनाव में रहने वाले डॉक्टरों में हार्ट अटैक का जोखिम सामान्य जनसंख्या की तुलना में 2 से 2.5 गुना अधिक पाया गया है।

विशेष रूप से ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि

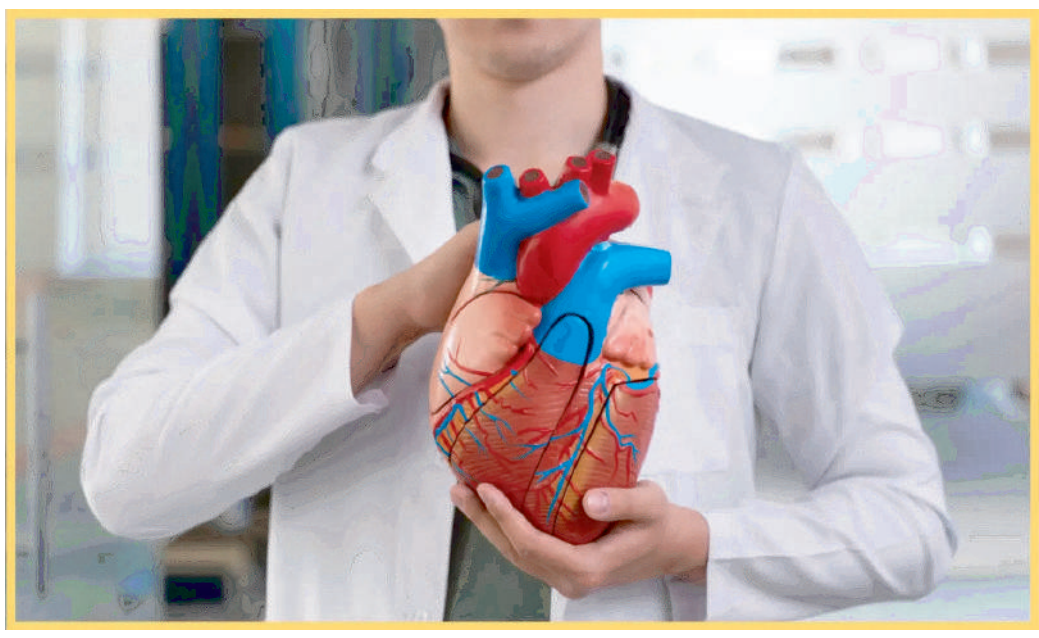

उनकी मृत्यु सुबह लगभग 6 बजे हुई—यह समय हृदयाघात के लिए सबसे संवेदनशील माना जाता है, क्योंकिः

सुबह के समय शरीर में प्राकृतिक रूप से क्लॉटिंग फैक्टर्स बढ़ते हैं

धमनियों में संकुचन होता है

रातभर की हल्की डिहाइड्रेशन जोखिम को और बढ़ा देती है

3. जीवनशैली से जुड़े सूक्ष्म लेकिन प्रभावी जोखिम

भले ही वे नियमित व्यायाम करते हों, परंतुः

ऑपरेशन के दौरान भोजन छोड़ना

अधिक कैफीन पर निर्भरता

शरीर को पर्याप्त रिकवरी टाइम न मिलना

ये सभी कारक धीरे-धीरे हृदय पर दबाव डालते हैं।

इसके अतिरिक्तः

शहरी प्रदूषण

परिष्कृत कार्बोहाइड्रेट और रिफाइंड तेलों वाला भारतीय आहार

संभावित स्लीप एपनिया (जो शिफ्ट-वर्क करने वालों में आम है)

हल्का लेकिन अनदेखा हाई ब्लड प्रेशर

भी इस दुखद घटना में योगदान दे सकते हैं।

4. आनुवंशिक और अज्ञात (Idiopathic) कारण

कई बार पारिवारिक इतिहास या जेनेटिक मार्कर्स ऐसे होते हैं, जिन्हें सामान्य जांचों में पकड़ा नहीं जा सकता।

नवीन चिकित्सा शोध यह स्वीकार करता है कि कुछ अस्थिर प्लाक इतने खतरनाक होते हैं कि वे पूर्ण मेडिकल चेक-अप के बावजूद भी पहचान में नहीं आते—जब तक वे फट न जाएँ।

क्या डॉ. पाखमोडे अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह थे?

निश्चित रूप से नहीं।

उपलब्ध तथ्यों के अनुसार, वे अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग थे, फिटनेस बनाए रखते थे और नियमित जांच कराते थे।

यह मामला लापरवाही का नहीं, बल्कि चिकित्सा जगत में प्रचलित एक आम समस्या का प्रतीक है—

👉 दूसरों की देखभाल में लगे डॉक्टर, अक्सर स्वयं के सूक्ष्म लक्षणों को थकान या तनाव मानकर अनदेखा कर देते हैं।

कार्डियोलॉजिस्ट बताते हैं कि:

डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी अपने लिए डीप कार्डियक टेस्ट (जैसे स्ट्रेस टेस्ट, CT-एंजियोग्राफी) को अक्सर टालते हैं

अत्यधिक कार्यभार के कारण वर्क-लाइफ बैलेंस टूट जाता है

नवीन चिकित्सा दृष्टिकोण और सीख

हालिया वैश्विक गाइडलाइंस अब इस पर जोर दे रही हैं कि:

केवल ECG पर्याप्त नहीं है

उच्च-तनाव वाले पेशों में कार्यरत लोगों के लिए एडवांस कार्डियक स्क्रीनिंग आवश्यक है

तनाव प्रबंधन, गुणवत्तापूर्ण नींद और नियमित रिकवरी उतनी ही जरूरी है जितना व्यायाम और आहार

अपर्याप्त गुणवत्तापूर्ण नींद और अत्यधिक तनाव: कब्ज़ और व्यापक स्वास्थ्य समस्याओं के छिपे हुए कारण

अधिकांश लोग यह मानते हैं कि कब्ज़ केवल गलत आहार या फाइबर की कमी के कारण होता है। लेकिन आधुनिक वैज्ञानिक शोध स्पष्ट रूप से बताते हैं कि अपर्याप्त और खराब गुणवत्ता की नींद तथा अत्यधिक मानसिक तनाव पाचन स्वास्थ्य पर गहरा और दूरगामी प्रभाव डालते हैं। ये कारक मामूली नहीं, बल्कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं।

1. अपर्याप्त नींद कैसे कब्ज़ का कारण बनती है

आधुनिक विज्ञान के अनुसार, खराब नींद की गुणवत्ता, कम नींद की अवधि और अनियमित नींद-जागरण चक्र, सभी का सीधा संबंध दीर्घकालिक कब्ज़ से है।

PubMed में प्रकाशित एक सिस्टमैटिक रिव्यू और मेटा-एनालिसिस के अनुसार, जिन लोगों को नींद से संबंधित समस्याएँ होती हैं, उनमें कब्ज़ होने की संभावना सामान्य नींद लेने वालों की तुलना में कहीं अधिक पाई गई है।

इसके पीछे कई शारीरिक कारण हैं:

स्वायत्त तंत्रिका तंत्र (Autonomic Nervous System) का असंतुलनः

खराब नींद से "फाइट या फ्लाइट" प्रतिक्रिया (सिम्पैथेटिक सिस्टम) अधिक सक्रिय हो जाती है, जबकि "रेस्ट एंड डाइजेस्ट" प्रणाली (पैरासिम्पैथेटिक सिस्टम) दब जाती है। यह दूसरी प्रणाली ही आँतों की सामान्य गति को नियंत्रित करती है।

(PMC के अनुसार)

मांसपेशियों और आंत्र गति पर प्रभावः

नींद की कमी से शरीर की मांसपेशियाँ, विशेषकर पेल्विक फ्लोर मसल्स, कमजोर हो सकती हैं, जो मल त्याग के लिए आवश्यक होती हैं।

(Frontiers में प्रकाशित शोध के अनुसार)

हार्मोनल और माइक्रोबायोम असंतुलनः

नींद की कमी से कोर्टिसोल और मेलाटोनिन जैसे हार्मोन प्रभावित होते हैं, साथ ही आँतों में मौजूद लाभकारी बैक्टीरिया (Gut Microbiome) का संतुलन बिगड़ जाता है, जो पाचन क्रिया में अहम भूमिका निभाते हैं।

(The Times of India के अनुसार)

दिलचस्प रूप से, PubMed में यह भी बताया गया है कि नींद और कब्ज़ के बीच U-आकार का संबंध होता है—अर्थात बहुत कम या बहुत अधिक नींद, दोनों ही स्थितियों में कब्ज़ का जोखिम बढ़ जाता है।

2. अत्यधिक तनाव कैसे कब्ज़ को जन्म देता है

तनाव केवल मानसिक स्थिति नहीं है; यह शरीर में कई जैविक प्रक्रियाओं को प्रभावित करता हैः

तनाव हार्मोन पाचन को धीमा कर देते हैंः

अत्यधिक कोर्टिसोल और एड्रेनालिन पाचन तंत्र से रक्त प्रवाह कम कर देते हैं, जिससे आँतों की गति धीमी हो जाती है और कब्ज़ होता है।

(NDTV के अनुसार)

तनाव से जुड़ी जीवनशैली की आदतेंः

तनाव की स्थिति में लोग भोजन छोड़ देते हैं, पानी कम पीते हैं, जंक फूड का सेवन बढ़ा देते हैं या मल त्याग की इच्छा को टालते हैं—ये सभी कब्ज़ को और गंभीर बना देते हैं।

(Herzindagi के अनुसार)

गट-ब्रेन एक्सिस का बिगड़नाः

मस्तिष्क और आँतों के बीच एक द्विदिश संचार प्रणाली होती है, जिसे गट-ब्रेन एक्सिस कहा जाता है। तनाव इस संतुलन को बिगाड़ देता है, जिससे कब्ज़ और अन्य जठरांत्र संबंधी समस्याएँ बढ़ जाती हैं।

(Navbharat Times के अनुसार)

इसके अलावा, तनाव और कब्ज़ मिलकर एक दुष्चक्र (Vicious Cycle) बनाते हैं—तनाव से कब्ज़ बढ़ता है, और कब्ज़ से असहजता, चिंता, चिड़चिड़ापन और नींद की समस्या और गहरी हो जाती है।

(NDTV के अनुसार)

3. कब्ज़ से आगेः व्यापक स्वास्थ्य प्रभाव

खराब नींद और दीर्घकालिक तनाव के दुष्प्रभाव केवल पाचन तक सीमित नहीं रहतेः

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभावः

नींद की कमी अवसाद, चिंता और मूड डिसऑर्डर के जोखिम को बढ़ाती है, जबकि लगातार तनाव मानसिक संतुलन और सोचने-समझने की क्षमता को कमजोर करता है।

(IJNRD के अनुसार)

मेटाबॉलिक और प्रणालीगत रोगः

अपर्याप्त नींद को मेटाबॉलिक सिंड्रोम, मधुमेह, हृदय रोग और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली से जोड़ा गया है।

(NDTV India के अनुसार)

गट-ब्रेन संबंध और दीर्घकालिक प्रभावः

नए शोध संकेत देते हैं कि लंबे समय तक रहने वाली पाचन समस्याएँ, जैसे कब्ज़, भविष्य में संज्ञानात्मक गिरावट और माइक्रोबायोम असंतुलन से जुड़ी हो सकती हैं—जो मस्तिष्क और आँतों के गहरे संबंध को दर्शाता है।

(Health रिपोर्ट्स के अनुसार)

4. बड़ा परिप्रेक्ष्यः शरीर की प्रकृति (Constitution) और संपूर्ण स्वास्थ्य

समग्र दृष्टिकोण से देखा जाए तो शरीर की प्रकृति (Constitution)—जिसमें आनुवंशिकी, जीवनशैली, तनाव सहन करने की क्षमता, नींद के पैटर्न और मानसिक प्रवृत्ति शामिल हैं—यह तय करती है कि हमारा शरीर आंतरिक और बाहरी दबावों पर कैसे प्रतिक्रिया देता है।

जब नींद और तनाव प्रबंधन की उपेक्षा की जाती है, तो शरीर की मूल प्रणालियाँ असंतुलित हो जाती हैं, और इसका परिणाम कब्ज़, मानसिक थकान, मूड में उतार-चढ़ाव और दीर्घकालिक रोगों के रूप में सामने आता है।

सारांश

कब्ज़ केवल फाइबर की कमी से होने वाली एक साधारण पाचन समस्या नहीं है। यह अक्सर अपर्याप्त नींद और अत्यधिक तनाव से उत्पन्न गहरे शारीरिक-मानसिक असंतुलन का संकेत होता है।

अतः स्वस्थ जीवन के लिए केवल सही आहार ही नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण नींद, तनाव प्रबंधन और संतुलित जीवनशैली को समान महत्व देना आवश्यक है—तभी हम न केवल बेहतर पाचन, बल्कि दीर्घकालिक, सशक्त और संतुलित स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यस्थल, महिला स्वास्थ्य और मासिक धर्म अवकाश

(क्या अनिवार्य अवकाश नीति महिलाओं के अधिकारों को सशक्त बनाती है या उनके पेशेवर अवसरों को सीमित करने का जोखिम भी साथ लाती है?)

- डॉ. प्रियंका सौरभ

मासिक धर्म स्त्री जीवन की एक स्वाभाविक जैविक प्रक्रिया है, किंतु लंबे समय तक इसे सामाजिक संकोच, मौन और उपेक्षा के दायरे में रखा गया। आधुनिक समय में जब कार्यस्थलों पर लैंगिक समानता, समावेशिता और संवेदनशील नीतियों की चर्चा तेज हुई है, तब "अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश" की अवधारणा भी विमर्श के केंद्र में आई है। कई देशों और संस्थानों ने महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान विशेष अवकाश देने की नीतियाँ अपनाई हैं, ताकि वे शारीरिक असुविधा और मानसिक तनाव के समय आराम कर सकें। किंतु यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या ऐसी अनिवार्य नीतियाँ वास्तव में कार्यस्थल पर समानता को बढ़ावा देती हैं, या फिर अनजाने में रोजगार में लैंगिक भेदभाव को और मजबूत कर देती हैं। इस संदर्भ में इस मुद्दे का आलोचनात्मक विश्लेषण आवश्यक है।

सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि मासिक धर्म के दौरान कई महिलाओं को शारीरिक पीड़ा, थकान, चक्कर, या हार्मोनल परिवर्तन के कारण मानसिक तनाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे में कार्यस्थल पर निरंतर काम करना उनके लिए कठिन हो सकता है। अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश की नीति का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के स्वास्थ्य और गरिमा की रक्षा करना है। यह नीति इस बात को स्वीकार करती है कि महिलाओं की जैविक आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं और उन्हें उसी अनुसार कार्यस्थल पर सहूलियत मिलनी चाहिए। इस दृष्टि से यह नीति लैंगिक संवेदनशीलता का प्रतीक है और महिलाओं के प्रति सहानुभूति और सम्मान को बढ़ावा देती है।

इसके अतिरिक्त, अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश कार्यस्थलों पर लंबे समय से चले आ रहे उस मौन को भी तोड़ने का प्रयास है, जिसमें मासिक धर्म को छिपाने या शर्म की चीज़ माना जाता था। जब संस्थान औपचारिक रूप से इस विषय को स्वीकार करते हैं, तब यह सामाजिक स्तर पर भी एक सकारात्मक संदेश देता है कि मासिक धर्म कोई कमजोरी नहीं बल्कि एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। इससे महिलाओं को अपनी समस्याओं के बारे में खुलकर बात करने का साहस मिलता है और कार्यस्थल का वातावरण अधिक मानवीय और संवेदनशील बन सकता है।

कुछ विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि ऐसी नीतियाँ कार्यस्थलों पर उत्पादकता को भी अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ा सकती हैं। जब कर्मचारियों को आवश्यकता के समय आराम मिलता है, तो वे स्वस्थ होकर बेहतर तरीके से काम कर पाते हैं। यदि किसी महिला को मासिक धर्म के दौरान अत्यधिक दर्द या असुविधा है और फिर भी उसे काम करना पड़ता है, तो उसका प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है। ऐसे में अल्पकालिक अवकाश उसे शारीरिक और मानसिक रूप से संतुलित करने में सहायक हो सकता है। इस प्रकार, स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील नीतियाँ दीर्घकालिक दृष्टि से संस्थानों के लिए भी लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं।

हालाँकि, इस नीति के पक्ष में प्रस्तुत इन तर्कों के साथ-साथ इसके संभावित नकारात्मक प्रभावों को भी गंभीरता से समझना आवश्यक है। कई आलोचकों का

मानना है कि अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश नीतियाँ अनजाने में रोजगार में लैंगिक भेदभाव को बढ़ावा दे सकती हैं। यदि किसी संस्थान को यह लगता है कि महिला कर्मचारियों को हर महीने अतिरिक्त अवकाश देना पड़ेगा, तो वह भर्ती के समय पुरुष उम्मीदवारों को प्राथमिकता दे सकता है। विशेष रूप से निजी क्षेत्र में, जहाँ उत्पादकता और समय-प्रबंधन को अत्यधिक महत्व दिया जाता है, वहाँ नियोक्ता महिलाओं को "अतिरिक्त दायित्व" के रूप में देखने लग सकते हैं।

इस दृष्टिकोण से यह भी कहा जाता है कि अनिवार्य अवकाश की नीति महिलाओं को "कम सक्षम" या "कम विश्वसनीय" कर्मचारी के रूप में प्रस्तुत कर सकती है। यह धारणा बन सकती है कि महिलाएँ हर महीने कुछ दिनों तक कार्य के लिए अनुपलब्ध रहेंगी, जिससे उनके प्रति नियोक्ताओं का दृष्टिकोण नकारात्मक हो सकता है। परिणामस्वरूप, महिलाओं को उच्च पदों, नेतृत्व की भूमिकाओं या महत्वपूर्ण परियोजनाओं में अवसर कम मिल सकते हैं। इस प्रकार, जो नीति महिलाओं के हित में बनाई जाती है, वही अनजाने में उनके पेशेवर विकास के रास्ते में बाधा बन सकती है।

एक और महत्वपूर्ण आलोचना यह है कि सभी महिलाओं का मासिक धर्म अनुभव समान नहीं होता। कुछ महिलाओं को इस दौरान अत्यधिक पीड़ा होती है, जबकि कई महिलाएँ सामान्य रूप से अपने कार्य कर सकती हैं। यदि अवकाश अनिवार्य बना दिया जाए, तो यह उन महिलाओं के लिए भी लागू होगा जिन्हें इसकी आवश्यकता नहीं है। इससे यह संदेश जा सकता है कि मासिक धर्म के दौरान हर महिला कार्य करने में असमर्थ होती है, जो वास्तविकता से मेल नहीं खाता। इसलिए कई विशेषज्ञ मानते हैं कि "अनिवार्य" शब्द स्वयं में समस्या पैदा कर सकता है।

इसके अलावा, यह भी तर्क दिया जाता है कि यदि कार्यस्थलों पर केवल महिलाओं के लिए विशेष अवकाश की व्यवस्था की जाती है, तो यह समानता के सिद्धांत के साथ विरोधाभास पैदा कर सकती है। लैंगिक समानता का मूल विचार यह है कि सभी कर्मचारियों को समान अवसर और समान सम्मान मिले। यदि किसी एक समूह को विशेषाधिकार दिए जाते हैं, तो दूसरे समूह में असंतोष या असमानता की भावना उत्पन्न हो सकती है। हालांकि यह तर्क पूरी तरह से उचित नहीं माना जा सकता, क्योंकि समानता का अर्थ हमेशा "समान व्यवहार" नहीं बल्कि "न्यायसंगत व्यवहार" भी होता है, फिर भी इस दृष्टिकोण को नीति निर्माण में ध्यान में रखना आवश्यक है।

कई देशों के अनुभव भी इस बहस को जटिल बनाते हैं। कुछ स्थानों पर मासिक धर्म अवकाश की नीति लागू होने के बावजूद महिलाओं ने इसका उपयोग कम किया है, क्योंकि उन्हें डर होता है कि इससे उनके प्रति नकारात्मक धारणा बन सकती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि केवल नीति बनाना पर्याप्त नहीं है; कार्यस्थल की संस्कृति और मानसिकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। यदि संस्थान का वातावरण संवेदनशील और सहयोगी नहीं है, तो कर्मचारी उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाने में संकोच कर सकते हैं।

इस संदर्भ में कुछ विशेषज्ञ "अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश" के बजाय "लचीली और वैकल्पिक नीति" का समर्थन करते हैं। उनका मानना है कि कर्मचारियों को यह स्वतंत्रता दी जानी चाहिए कि वे अपनी शारीरिक स्थिति के अनुसार अवकाश ले सकें। उदाहरण के लिए, सामान्य चिकित्सा अवकाश या लचीले कार्य समय की व्यवस्था ऐसी हो सकती है जिसमें महिला कर्मचारी आवश्यकता पड़ने पर घर से काम कर सकें या कुछ समय के लिए विश्राम ले सकें। इस प्रकार की व्यवस्था व्यक्तिगत जरूरतों का सम्मान करती है और साथ ही अनिवार्यता से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को भी कम कर सकती है।

इसके साथ ही, कार्यस्थलों पर मासिक धर्म से जुड़ी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वच्छ शौचालय, सैनिटरी उत्पादों की उपलब्धता, और संवेदनशील कार्य वातावरण महिलाओं के लिए अत्यधिक सहायक हो सकते हैं। कई बार अवकाश से अधिक महत्वपूर्ण यह होता है कि कार्यस्थल ऐसा हो जहाँ महिलाएँ बिना झिझक अपनी आवश्यकताओं के बारे में बात कर सकें और उन्हें आवश्यक सहयोग मिल सके।

वास्तव में, इस पूरी बहस का मूल प्रश्न यह है कि समानता का अर्थ क्या है। क्या समानता का अर्थ यह है कि सभी कर्मचारियों के साथ बिल्कुल समान व्यवहार किया जाए, या फिर यह कि उनकी भिन्न आवश्यकताओं को समझते हुए उन्हें न्यायसंगत सुविधाएँ दी जाएँ? आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण यह मानता है कि वास्तविक समानता तभी संभव है जब जैविक और सामाजिक अंतर को ध्यान में रखते हुए नीतियाँ बनाई जाएँ। इस दृष्टि से मासिक धर्म अवकाश का विचार पूरी तरह से अनुचित नहीं है। लेकिन इसे इस प्रकार लागू करना आवश्यक है कि यह महिलाओं को कमजोर या कम सक्षम साबित करने के बजाय उनकी गरिमा और अधिकारों को मजबूत करे।

अंततः यह कहा जा सकता है कि अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश नीतियाँ एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा प्रस्तुत करती हैं। एक ओर वे महिलाओं के स्वास्थ्य, गरिमा और संवेदनशीलता को मान्यता देती हैं, वहीं दूसरी ओर वे अनजाने में रोजगार में लैंगिक भेदभाव को बढ़ावा देने का जोखिम भी पैदा कर सकती हैं। इसलिए नीति निर्माण में संतुलित और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। अनिवार्यता के बजाय लचीली नीतियाँ, जागरूकता, और संवेदनशील कार्यस्थल संस्कृति इस दिशा में अधिक प्रभावी समाधान हो सकते हैं।

समाज और संस्थानों को यह समझना होगा कि मासिक धर्म कोई बाधा नहीं बल्कि जीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया है। यदि कार्यस्थल ऐसी नीतियाँ विकसित करें जो महिलाओं के स्वास्थ्य का सम्मान करें और साथ ही उनकी पेशेवर क्षमताओं पर विश्वास बनाए रखें, तभी वास्तविक लैंगिक समानता की दिशा में सार्थक कदम उठाया जा सकेगा।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

माता दुर्गा को समर्पित 9 दिन बेहद कल्याणकारी

हिंदू पंचांग के अनुसार वर्ष में चार बार नवरात्रि का पर्व मनाया जाता है जो शरद, चैत्र, माघ और आषाढ़ के महीने में पड़ती हैं। शरद और चैत्र के महीने में पड़ने वाली नवरात्रि मां दुर्गा के भक्तों के लिए विशेष होती है वहीं माघ और आषाढ़ के महीने में पड़ने वाली नवरात्रि तांत्रिकों व अघोरियों के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है जिसे गुप्त नवरात्रि कहते हैं। इन 9 दिनों में भक्त मां दुर्गा की भक्ति में लीन रहते हैं तथा दिन-रात उनकी उपासना करते हैं। श्री लक्ष्मीनारायण एस्ट्रो सॉल्यूशन अजमेर की निदेशिका ज्योतिषाचार्या एवं टैरो कार्ड रीडर नीतिका शर्मा ने बताया कि हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि 19 मार्च को सुबह 6:52 मिनट पर शुरू होगी और तिथि का समापन 20 मार्च की सुबह 4:52 मिनट पर होगा। इसलिए इस वर्ष चैत्र नवरात्रि की शुरुआत 19 मार्च को घटस्थापना के साथ होगी। उदया तिथि के अनुसार इस साल चैत्र नवरात्रि 19 मार्च से शुरू होगी और इसका समापन 27 मार्च को होगा। चैत्र नवरात्रि प्रतिपदा तिथि से ही नया हिंदू वर्ष प्रारंभ हो जाता है। वर्ष में दो बार चैत्र नवरात्रि और शारदीय

नवरात्रि में मां दुर्गा की विधि विधान से पूजा की जाती है। हालांकि कि गुप्त नवरात्रि भी आती है, लेकिन चैत्र नवरात्रि और शारदीय नवरात्रि की लोक मान्यता ज्यादा है। इस नवरात्रि माता भक्तों को दर्शन देने के लिए घोड़े में सवार होकर आ रही हैं। शक्ति का स्वरुप माने जाने वाली माता दुर्गा को समर्पित यह 9 दिन बेहद कल्याणकारी होते हैं। इन 9 दिनों में माता दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है और पूरे भारत में भक्ति और उल्लास का माहौल रहता है।

घटस्थापना तिथि: - 19 मार्च

नवरात्रि के पहले दिन मां दुर्गा के पहले स्वरूप मां शैलपुत्री की पूजा होती है जो चंद्रमा का प्रतीक हैं। मां शैलपुत्री की पूजा करने से सभी बुरे प्रभाव और शगुन दूर होते हैं। इस दिन भक्तों को पीले रंग के कपड़े पहनने चाहिए।

द्वितीया तिथि: - 20 मार्च

मां दुर्गा का दूसरा स्वरूप मां ब्रह्मचारिणी है और नवरात्रि के दूसरे दिन इनकी पूजा का विधान है। मां ब्रह्मचारिणी मंगल ग्रह को प्रदर्शित करती हैं और जो भक्त मां ब्रह्मचारिणी की पूजा सच्चे दिल से करता है उसके सभी दुख, दर्द और तकलीफें दूर हो जाती हैं। मां ब्रह्मचारिणी की पूजा करते समय हरे रंग के कपड़े पहनें।

तृतीया तिथि: 21 मार्च

नवरात्रि के तीसरे दिन मां चंद्रघंटा की पूजा होती है जो शुक्र ग्रह को नियंत्रित करती हैं। इनकी पूजा करने से शक्ति का संचार होता है तथा हर तरह के भय दूर हो जाते हैं। मां चंद्रघंटा की पूजा में ग्रे रंग का कपड़ा पहनें।

चतुर्थी तिथि: - 22 मार्च

शरद नवरात्रि के चौथे दिन मां कुष्मांडा की पूजा का विधान है जो सूर्य देव को प्रदर्शित करती हैं। चतुर्थी तिथि पर संतरे रंग का कपड़ा पहनना शुभ माना जाता है। मां कुष्मांडा की पूजा करने से भविष्य में आने वाली सभी विपत्तियां दूर होती हैं।

पंचमी तिथि: - 23 मार्च

बुध ग्रह को नियंत्रित करने वाली माता मां स्कंदमाता की पूजा शरद नवरात्रि के पांचवें दिन होती है। जो भक्त मां स्कंदमाता की पूजा करता है उसके ऊपर मां की विशेष कृपा बरसती है। पंचमी तिथि पर सफेद रंग का कपड़ा पहना अनुकूल माना जाता है।

षष्ठी तिथि: - 24 मार्च

नवरात्रि की षष्ठी तिथि मां कात्यायनी को समर्पित है। इस दिन लाल कपड़े पहनकर मां कात्यायनी की पूजा करें जो बृहस्पति ग्रह को नियंत्रित करती हैं। मां कात्यायनी की पूजा करने से हिम्मत और शक्ति में वृद्धि होती है।

सप्तमी तिथि: - 25 मार्च

इस दिन मां कालरात्रि की पूजा की जाती है जो शनि ग्रह का प्रतीक हैं। मां कालरात्रि की पूजा करने से भक्तों में वीरता का संचार होता है। सप्तमी तिथि पर आपको रॉयल ब्लू रंग के कपड़े पहनने चाहिए।

अष्टमी तिथि: - 26 मार्च

अष्टमी तिथि पर महागौरी की पूजा करने का विधान है। इस दिन गुलाबी रंग का कपड़ा पहनना मंगलमय माना जाता है। माता महागौरी राहु ग्रह को नियंत्रित करती हैं और अपने भक्तों के जीवन से सभी नकारात्मक शक्तियों को दूर करती हैं।

नवमी तिथि: - 27 मार्च

मां सिद्धिदात्री राहु ग्रह को प्रदर्शित करते हैं जिनकी पूजा करने से बुद्धिमता और ज्ञान का संचार होता है। नवमी तिथि पर आपको पर्पल रंग का कपड़ा पहनना चाहिए।

महाशक्ति की आराधना का पर्व है नवरात्रि

महाशक्ति की आराधना का पर्व है नवरात्रि। तीन हिंदू देवियों - पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती के नौ विभिन्न स्वरूपों की उपासना के लिए निर्धारित है, जिन्हें नवदुर्गा के नाम से जाना जाता है। पहले तीन दिन पार्वती के तीन स्वरूपों की अगले तीन दिन लक्ष्मी माता के स्वरूपों और आखिरी के तीन दिन सरस्वती माता के स्वरूपों की पूजा करते हैं। दुर्गा सप्तशती के अन्तर्गत देव दानव युद्ध का विस्तृत वर्णन है। इसमें देवी भगवती और मां पार्वती ने किस प्रकार से देवताओं के साम्राज्य को स्थापित करने के लिए तीनों लोकों में उत्पात मचाने वाले महादानवों से लोहा लिया इसका वर्णन आता है। यही कारण है कि आज सारे भारत में हर जगह दुर्गा यानि नवदुर्गाओं के मन्दिर स्थपित हैं। श्री लक्ष्मीनारायण एस्ट्रो सॉल्यूशन अजमेर की निदेशिका ज्योतिषाचार्या एवं टैरो कार्ड रीडर नीतिका शर्मा ने बताया कि हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि 19 मार्च को सुबह 6:52 मिनट पर शुरू होगी और तिथि का समापन 20 मार्च की सुबह 4:52 मिनट पर होगा। इसलिए इस वर्ष चैत्र नवरात्रि की शुरुआत 19 मार्च को घटस्थापना के साथ होगी। उदया तिथि के अनुसार इस साल चैत्र नवरात्रि 19 मार्च से शुरू होगी और इसका समापन 27 मार्च को होगा। चैत्र नवरात्रि प्रतिपदा तिथि से ही नया हिंदू वर्ष प्रारंभ हो जाता है।

वर्ष में दो बार चैत्र नवरात्रि और शारदीय नवरात्रि में मां दुर्गा की विधि विधान से पूजा की जाती है। हालांकि कि गुप्त नवरात्रि भी आती है, लेकिन चैत्र नवरात्रि और शारदीय नवरात्रि की लोक मान्यता ज्यादा है। साल में दो बार आश्विन और चैत्र मास में नौ दिन के लिए उत्तर से दक्षिण भारत में नवरात्र उत्सव का माहौल होता है। सम्पूर्ण दुर्गासप्तशती का अगर पाठ न भी कर सकें तो निम्नलिखित श्लोक का पाठ को पढ़ने से सम्पूर्ण दुर्गासप्तशती और नवदुर्गाओं के पूजन का फल प्राप्त हो जाता है।

सर्वमंगलमंगलये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽतु ते।। शरणांगतदीन आर्त परित्राण परायणे सर्वस्यार्तिहरे देवी नारायणि नमोऽस्तु ते।। सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यारत्नाहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।।

वैसे तो दुर्गा के 108 नाम गिनाये जाते हैं लेकिन नवरात्रों में उनके स्थूल रूप को ध्यान में रखते हुए नौ दुर्गाओं की स्तुति और पूजा पाठ करने का गुप्त मंत्र ब्रहमा जी ने अपने पौत्र मार्कण्डेय ऋषि को दिया था। इसको देवीकवच भी कहते हैं। देवीकवच का पूरा पाठ दुर्गा सप्तशती के 56 श्लोकों के अन्दर मिलता है। नौ दुर्गाओं के स्वरूप का वर्णन संक्षेप में ब्रहमा जी ने इस प्रकार से किया है।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रहमचारिणी।तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।।पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्।नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।।

उपरोक्त नौ दुर्गाओं ने देव दानव युद्ध में विशेष भूमिका निभाई है इनकी सम्पूर्ण कथा देवी भागवत पुराण और मार्कण्डेय पुराण में लिखित है। शिव पुराण में भी इन दुर्गाओं के उत्पन्न होने की कथा का वर्णन आता है कि कैसे हिमालय राज की पुत्री पार्वती ने अपने भक्तों को सुरक्षित रखने के लिए तथा धरती आकाश पाताल में सुख शान्ति स्थापित करने के लिए दानवों राक्षसों और आतंक फैलाने वाले तत्वों को नष्ट करने की प्रतीज्ञा की ओर समस्त नवदुर्गाओं को विस्तारित करके उनके 108 रूप धारण करने से तीनों लोकों में दानव और राक्षस साम्राज्य का अन्त किया। इन नौदुर्गाओं में सबसे प्रथम देवी का नाम है शैल पुत्री जिसकी पूजा नवरात्र के पहले दिन होती है। दूसरी देवी का नाम है ब्रहमचारिणी जिसकी पूजा नवरात्र के दूसरे दिन होती है। तीसरी देवी का नाम है चन्द्रघण्टा जिसकी पूजा नवरात्र के तीसरे दिन होती है। चौथी देवी का नाम है कूष्माण्डा जिसकी पूजा नवरात्र के चौथे दिन होती है। पांचवी दुर्गा का नाम है स्कन्दमाता जिसकी पूजा नवरात्र के पांचवें दिन होती है। छठी दुर्गा का नाम है कात्यायनी जिसकी पूजा नवरात्र के छठे दिन होती है । सातवी दुर्गा का नाम है कालरात्रि जिसकी पूजा नवरात्र के सातवें दिन होती है। आठवीं देवी का नाम है महागौरी जिसकी पूजा नवरात्र के आठवें दिन होती है। नवीं दुर्गा का नाम है सिद्धिदात्री जिसकी पूजा नवरात्र के अन्तिम दिन होती है। इन सभी दुर्गाओं के प्रकट होने और इनके कार्यक्षेत्र की बहुत लम्बी चौड़ी कथा और फेहरिस्त है। लेकिन यहां हम संक्षेप में ही उनकी पूजा अर्चना का वर्णन कर सकेंगे।

हर समस्या का समाधान हैं ये श्लोक

नवरात्र में शक्ति साधना व कृपा प्राप्ति का का सरल उपाय दुर्गा सप्तशती का पाठ है। नवरात्र के दिवस काल में सविधि मां के कलश स्थापना के साथ शतचंडी, नवचंडी, दुर्गा सप्तशती और देवी अथर्वशीर्ष का पाठ किया जाता है। दुर्गा सप्तशती के पाठ के कई विधि विधान है। दुर्गा सप्तशती महर्षि वेदव्यास रचित मार्कण्डेय पुराण के सावर्णि मन्वतर के देवी महात्म्य के 700 श्लोक का एक भाग है। दुर्गा सप्तशती में अध्याय एक से तेरह तक तीन चरित्र विभाग हैं। इसमें 700 श्लोक हैं।

दुर्गा सप्तशती के छह अंग तेरह अध्याय को छोड़कर हैं। कवच, कीलक, अर्गला दुर्गा सप्तशती के प्रथम तीन अंग और प्रधानिक आदि तीन रहस्य हैं। इसके अलावा और कई मंत्र भाग है जिसे पूरा करने से दुर्गा सप्तशती पाठ की पूर्णता होती है। इस संदर्भ में विद्वानों में मतांतर है। दुर्गा-सप्तशती को दुर्गा-पाठ, चंडी-पाठ से भी संबोधित करते हैं। चंडी पाठ में छह संवाद है।

महर्षि मेधा ने सर्वप्रथम राजा सुरथ और समाधि वैश्य को दुर्गा का चरित्र सुनाया। तदनंतर यही कथा महर्षि मृकण्डु के पुत्र चिरंजीवी मार्कण्डेय ने मुनिवर भागुरि को सुनाई। यही कथा द्रोण पुत्र पक्षिगण ने महर्षि जैमिनी से कही। जैमिनी महर्षि वेदव्यास जी के शिष्य थे। यही कथा संवाद महर्षि वेदव्यास ने मार्कण्डेय पुराण में यथावत्क्रम वर्णन कर लोकोपकार के लिए संसार में प्रचारित की। इस प्रकार दुर्गा सप्तशती में दुर्गा के चरित्रों का वर्णन है।

मार्कण्डेय पुराण में ब्रह्माजी ने मनुष्यों के रक्षार्थ परम गोपनीय साधन, कल्याणकारी देवी कवच एवं परम पवित्र उपाय संपूर्ण प्राणियों को बताया, जो देवी के नौ मूर्ति-स्वरूप हैं, जिन्हें 'नव दुर्गा' कहा जाता है। उनकी आराधना आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से महानवमी तक की जाती है। श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ मनोरथ सिद्धि के लिए किया जाता है; क्योंकि श्री दुर्गा सप्तशती दैत्यों के संहार की शौर्य गाथा से अधिक कर्म, भक्ति एवं ज्ञान की त्रिवेणी हैं। यह श्री मार्कण्डेय पुराण का अंश है। यह देवी महात्म्य धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने में सक्षम है। सप्तशती में कुछ ऐसे भी स्तोत्र एवं मंत्र हैं, जिनके विधिवत पारायण से इच्छित मनोकामना की पूर्ति होती है।

देवी का ध्यान मंत्रः देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य। प्रसीद विश्वेतरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य।

इस प्रकार भगवती से प्रार्थना कर भगवती के शरणागत हो जाएं। देवी कई जन्मों के पापों का संहार कर भक्त को तार देती है। वही जननी सृष्टि की आदि, अंत और मध्य है।

देवी से प्रार्थना करें: शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे! सर्वस्यार्तिहरे देवि! नारायणि! नमोऽस्तुते॥

सर्वकल्याण एवं शुभार्थ प्रभावशाली माना गया हैः सर्व मंगलं मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्येत्र्यंबके गौरी नारायणि नमोस्तुऽते॥

बाधा मुक्ति एवं धन-पुत्रादि प्राप्ति के लिएः सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन-धान्य सुतान्वितः। मनुष्यों मत्प्रसादेन भवष्यति न संशय॥

सर्वबाधा शांति के लिएः सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।

आरोग्य एवं सौभाग्य प्राप्ति के लिए इस चमत्कारिक फल देने वाले मंत्र को स्वयं देवी दुर्गा ने देवताओं को दिया हैःदेहि सौभाग्यं आरोग्यं देहि में परमं सुखम्। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि॥

अर्थातः शरण में आए हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार है। देवी से प्रार्थना कर अपने रोग, अंदरूनी बीमारी को ठीक करने की प्रार्थना भी करें। ये भगवती आपके रोग को हरकर आपको स्वस्थ कर देंगी।

विपत्ति नाश के लिएः शरणागतर्दनार्त परित्राण पारायणे। सर्व स्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽतुते॥

मोक्ष प्राप्ति के लिएः त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या। विश्वस्य बीजं परमासि माया।। सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्। त्वं वैप्रसन्ना भुवि मुक्त हेतुः।।

शक्ति प्राप्ति के लिएः सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि। गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोह्यस्तु ते।।

अर्थातः तुम सृष्टि, पालन और संहार की शक्ति भूता, सनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

रक्षा का मंत्रः शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च।।

अर्थातः देवी! आप शूल से हमारी रक्षा करें। अम्बिके! आप खड्ग से भी हमारी रक्षा करें तथा घण्टा की ध्वनि और धनुष की टंकार से भी हमलोगों की रक्षा करें।

रोग नाश का मंत्रः रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता हाश्रयतां प्रयान्ति।

अर्थातः देवी! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके है। उनको विपत्ति तो आती ही नहीं। तुम्हारी शरण में गए हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं।

दुःख-दारिद्र नाश के लिएः दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः। स्वस्थै स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।। द्वारिद्र दुःख भयहारिणि का त्वदन्या। सर्वोपकारकारणाय सदाह्यद्रचिता।।

ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, संपदा प्राप्ति एवं शत्रु भय मुक्ति-मोक्ष के लिएः ऐश्वर्य यत्प्रसादेन सौभाग्य-आरोग्य सम्पदः। शत्रु हानि परो मोक्षः स्तुयते सान किं जनै॥

भय नाशक दुर्गा मंत्रः सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते, भयेभ्यास्त्रहिनो देवी दुर्गे देवी नमोस्तुते।

स्वप्न में कार्य सिद्धि-असिद्धि जानने के लिएः दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थ साधिके। मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्व प्रदर्शय।।

अर्थातः शरणागत की पीड़ा दूर करने वाली देवी हम पर प्रसन्न होओ। संपूर्ण जगत माता प्रसन्न होओ। विश्वेश्वरी! विश्व की रक्षा करो। देवी! तुम्ही चराचर जगत की अधिश्वरी हो।

मां के कल्याणकारी स्वरूप का वर्णनः सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि। गुणाश्रये गुणमये नारायणि! नमोऽस्तुते॥

अर्थातः हे देवी नारायणी! तुम सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली शरणागतवत्सला, तीन नेत्रों वाली एवं गौरी हो, तुम्हें नमस्कार है। तुम सृष्टि पालन और संहार की शक्तिभूता सनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणी! तुम्हें नमस्कार है।

इस प्रकार देवी उनकी शरण में जाने वालों को इतनी शक्ति प्रदान कर देती है कि उस मनुष्य की शरण में दूसरे लोग आने लग जाते हैं। देवी धर्म के विरोधी दैत्यों का नाश करने वाली है। देवताओं की रक्षा के लिए देवी ने दैत्यों का वध किया। वह आपके आतंरिक एवं बाह्य शत्रुओं का नाश करके आपकी रक्षा करेगी। आप बारंबार उसकी शरणागत हो एवं स्वरमय प्रार्थना करें।

हे सर्वेश्वरी तुम तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शांत करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो। पुनः भगवती के शरणागत जाकर भगवती चरित्र को पढ़ने, उनका गुणगान करने मात्र से सर्वबाधाओं से मुक्त होकर धन, धान्य एवं पुत्र से संपन्न होंगे। इसमें तनिक भी संदेह नहीं। भगवती के प्रादुर्भाव की सुंदर गाथाएं सुनकर मनुष्य निर्भय हो जाता है। मुझे अनुभव है कि भगवती के माहात्म्य को सुनने वाले पुरुष के सभी शत्रु नष्ट हो जाते हैं। उन्हें कल्याण की प्राप्ति होती है तथा उनका कुल आनंदित रहता है। स्वयं भगवती का वचन है कि मेरी शरण में आया हर व्यक्ति दुःख से परे हो जाता है। यदि आप संगणित है तथा और आपके बीच दूरियां हो गई हैं तो आप पुनः संगठित हो जाएंगे। बालक अशांत है तो शांतिमय जीवन हो जाएगा।

श्लोकः शांतिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने। ग्रहपीड़ासु चोग्रासु महात्मयं शणुयात्मम।

अर्थातः सर्वत्र शांति कर्म में, बुरे स्वप्न दिखाई देने पर तथा ग्रहजनित भयंकर पीड़ा उपस्थित होने पर माहात्म्य श्रवण करना चाहिए। इससे सब पीड़ाएं शांत और दूर हो जाती है। मनुष्यों के दुःस्वप्न भी शुभ स्वप्न में परिवर्तित हो जाते है। ग्रहों से अक्रांत हुए बालकों के लिए देवी का माहात्म्य शांतिकारक है। देवी प्रसन्न होकर धार्मिक बुद्धि, धन सभी प्रदान करती है। स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगंधादिभिस्तथा ददाति वित्तं पुत्रांश्च मति धर्मे गति शुभाम्।

जाप विधिः नवरात्रि के प्रतिपदा के दिन घटस्थापना के बाद संकल्प लेकर प्रातः स्नान करके दुर्गा की मूर्ति या चित्र की पंचोपचार या दक्षोपचार या षोड्षोपचार से गंध, पुष्प, धूप, दीपक नैवेद्य निवेदित कर पूजा करें। मुख पूर्व या उत्तर दिशा की ओर रखें। शुद्ध-पवित्र आसन ग्रहण कर रुद्राक्ष या तुलसी या चंदन की माला से मंत्र का जाप एक माला से पांच माला तक पूर्ण कर अपना मनोरथ कहें। पूरे नवरात्र जाप करने से वांछित मनोकामना अवश्य पूरी होती है। समयाभाव में केवल 10 बार मंत्र का जाप निरंतर प्रतिदिन करने पर भी माँ दुर्गा प्रसन्न हो जाती हैं। दुर्गेदुर्गति नाशिनी जय जय॥

श्लोकः नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततंनमः। नमः प्रकृत्यै भद्राये नियताः प्रणताः स्मताम्।

अर्थातः देवी को नमस्कार है, महादेवी शिवा को सर्वदा नमस्कार है। प्रकृति एवं भद्रा को प्रणाम है। हम लोग नियमपूर्वक जगदंबा को नमस्कार करते हैं। शैद्रा को नमस्कार है। नित्या गौरी एवं धात्री को बारंबार नमस्कार है। ज्योत्सनामयी चंद्ररूपिणी एवं सुखस्वरूपा देवी को सतत प्रणाम है। इस प्रकार देवी दुर्गा का स्मरण कर प्रार्थना करने मात्र से देवी प्रसन्न होकर अपने भक्तों की इच्छा पूर्ण करती है। देवी मां दुर्गा अपनी शरण में आए हर शरणार्थी की रक्षा कर उसका उत्थान करती है। देवी की शरण में जाकर देवी से प्रार्थना करें, जिस देवी की स्वयं देवता प्रार्थना करते हैं। वह भगवती शरणागत को आशीर्वाद प्रदान करती है।

चैत्र नवरात्रि 2026: घट स्थापना शुभ मुहूर्त

चैत्र नवरात्रि 2026 के शुभ अवसर पर घट स्थापना का महत्वपूर्ण मुहूर्त 19 मार्च को है। पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर जोधपुर के निदेशक ज्योतिषाचार्य डॉ. अनीष व्यास ने बताया कि इस वर्ष चैत्रशुक्ल प्रतिपदा गुरुवार, 19 मार्च 2026 को प्रातः 06:54 बजे से लेकर रात 04:52 तक रहेगी। शास्त्रों के अनुसार, चैत्र नवरात्रि का आरंभ और घट स्थापना इसी दिन होगी।

घट स्थापना के शुभ मुहूर्त

चैत्र नवरात्रि की शुरुआत और घट स्थापना के लिए शुभ मुहूर्त निम्नलिखित हैं:

द्विस्वभाव मीनलग्नः प्रातः 06:54 से प्रातः 07:50 तक

19 मार्च को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र और शुक्ल योग में शुरू होगी चैत्र नवरात्रि

19 मार्च से चैत्र नवरात्रि, पालकी पर सवार होकर आएंगी मां दुर्गा

मिथुनलग्नः प्रातः 11:24 से दोपहर 01:38 तक

शुभ चौघड़ियाः प्रातः 06:54 से प्रातः 08:05 तक

चर-लाभ-अमृत चौघड़ियाः प्रातः 11:04 से दोपहर 03:32 तक

अभिजित मुहूर्तः दोपहर 12:11 से 12:59 तक

इन मुहूर्तों में घट स्थापना और पूजा करना विशेष रूप से शुभ माना जाता है। यह समय देवी दुर्गा की उपासना के लिए सर्वोत्तम रहेगा, जब देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है और आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है।

नवरात्रि के दौरान पूजा विधिः

नवरात्रि के पहले दिन घट स्थापना करते समय घर में पवित्रता का ध्यान रखें। इस दिन देवी के प्रतीक के रूप में कलश (घट) स्थापित किया जाता है और फिर पूरे नौ दिनों तक पूजा अर्चना की जाती है। इस अवसर पर मंत्रोच्चार, हवन, और दुर्गा सप्तशती का पाठ करना अत्यंत शुभ माना जाता है।

इस शुभ मुहूर्त में घट स्थापना करने से घर में सुख-समृद्धि, शांति और मानसिक शांति का वातावरण बना रहता है। साथ ही देवी दुर्गा का आशीर्वाद प्राप्त करने से जीवन के समस्त कष्ट समाप्त होते हैं।

चैत्र नवरात्रि के इस पर्व पर हर किसी के जीवन में सुख-समृद्धि और आशीर्वाद का वास हो, यही हमारी शुभकामनाएं हैं।

38वीं इंटर-पॉलिटेक्निक खेल प्रतियोगिता का भव्य आगाज, प्रदेशभर के 30 संस्थानों के 500 खिलाड़ी दिखाएंगे दमखम : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

खेलों से निखरता है व्यक्तित्व, विकसित होती है अनुशासन व टीम भावना : स्वप्निल रविंद्र पाटिल

झज्जर, 18 मार्च। गुरु गोरखनाथ जी राजकीय बहुतकनीकी, झज्जर में 38वीं इंटर-पॉलिटेक्निक तीन दिवसीय खेल प्रतियोगिता का आज भव्य एवं उत्साहपूर्ण शुभारंभ उपायुक्त झज्जर स्वप्निल रविंद्र पाटिल द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई, जिसके पश्चात विभिन्न पॉलिटेक्निक संस्थानों से आए खिलाड़ियों द्वारा आकर्षक एवं अनुशासित मार्च-पास्ट प्रस्तुत किया गया। मार्च-पास्ट के दौरान खिलाड़ियों के जोश, उत्साह और अनुशासन ने उपस्थित जनसमूह को प्रभावित किया।

यह तीन दिवसीय खेल प्रतियोगिता 18 मार्च से 20 मार्च 2026 तक आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता में प्रदेश के 30 राजकीय पॉलिटेक्निक संस्थानों के लगभग 500 खिलाड़ी भाग ले रहे हैं, जो विभिन्न खेल विधाओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में खेल भावना को प्रोत्साहित करना, उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास को बढ़ावा देना तथा प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करना है।

मुख्य अतिथि उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अपने संबोधन में कहा कि खेल जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं और ये न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं बल्कि व्यक्तित्व के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि खेलों के माध्यम से अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, धैर्य, समर्पण तथा टीम भावना का विकास होता है, जो जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने खिलाड़ियों को खेल भावना के साथ प्रतिस्पर्धा करने तथा हार-जीत से ऊपर उठकर सीखने की प्रेरणा दी।

उन्होंने आगे कहा कि आज के प्रतिस्पर्धात्मक दौर में खेलों का महत्व और भी बढ़ गया है। खेल न केवल करियर के नए अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि युवाओं को नशे और अन्य नकारात्मक प्रवृत्तियों से दूर रखने में भी सहायक हैं। उन्होंने खिलाड़ियों को पूरे उत्साह, ऊर्जा और सकारात्मक सोच के साथ प्रतियोगिता में भाग लेने का आह्वान किया। संस्थान के प्राचार्य दिगपाल ने मुख्य अतिथि सहित सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने बताया कि इस आयोजन के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है और वे एक-दूसरे से सीखते हुए आगे बढ़ते हैं। इस अवसर पर संस्थान के विभागाध्यक्ष — परवीन मेहरा, दिनेश आर्या, प्रशांत सुहाग, परमाल सिंह, शीशपाल तथा विकास गोयल उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का मंच संचालन उमेश सरोज एवं डॉ. काजल सचदेवा द्वारा प्रभावी ढंग से किया गया। कार्यक्रम के अंत में खिलाड़ियों ने खेल भावना, अनुशासन और उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ प्रतियोगिता में भाग लेने का संकल्प लिया। आगामी तीन दिनों तक चलने वाली इस प्रतियोगिता को लेकर खिलाड़ियों एवं दर्शकों में विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है, जिससे पूरा परिसर खेलमय वातावरण में रंगा हुआ है।

सीएससी केंद्रों पर ब्रांडिंग व रेट लिस्ट अनिवार्य, उल्लंघन पर आईडी होगी बंद: उपायुक्त

केवल अधिकृत केंद्रों पर ही करवाएं सरकारी कार्य, तय शुल्क से अधिक वसूली पर होगी सख्त कार्रवाई

झज्जर, 18 मार्च। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने जिले में कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) के संचालन में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए सख्त निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने कहा कि सभी सीएससी संचालकों को अपने-अपने केंद्रों पर सीएससी का ब्रांडिंग बोर्ड तथा उपलब्ध सेवाओं की निर्धारित रेट लिस्ट लगाना अनिवार्य होगा। यदि किसी केंद्र पर यह व्यवस्था नहीं पाई गई तो संबंधित संचालक की आईडी तत्काल प्रभाव से बंद कर दी जाएगी।

उपायुक्त ने कहा कि सीएससी केंद्र सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं को आमजन तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं, इसलिए इन केंद्रों पर पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी संचालक अपने केंद्रों पर स्पष्ट रूप से ब्रांडिंग बोर्ड एवं रेट लिस्ट प्रदर्शित करें, ताकि नागरिकों को सेवाओं की जानकारी आसानी से मिल सके और उन्हें किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

उन्होंने आमजन से अपील करते हुए कहा कि किसी भी सरकारी सेवा के लिए केवल अधिकृत सीएससी केंद्रों पर ही कार्य करवाएं। जिले के मान्यता प्राप्त सीएससी केंद्रों की सूची जिला प्रशासन की वेबसाइट पर उपलब्ध है। नागरिक पहले सूची की जांच कर अपने नजदीकी अधिकृत केंद्र का चयन करें, जिससे धोखाधड़ी या अनियमितता से बचा जा सके।

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने चेतावनी देते हुए कहा कि निर्धारित शुल्क से अधिक राशि वसूलना किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा। यदि किसी भी केंद्र द्वारा अधिक शुल्क वसूला जाता है या नियमों का उल्लंघन किया जाता है, तो संबंधित संचालक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

उन्होंने सभी सीएससी संचालकों को निर्देशित किया कि वे निर्धारित नियमों का पालन करते हुए आमजन को पारदर्शी, सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण सेवाएं प्रदान करें, ताकि शासन की योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक प्रभावी रूप से पहुंच सके।

बहादुरगढ़ में गैस सिलेंडरों पर प्रशासन की सख्ती, एसडीएम का औचक निरीक्षण

वीरेंद्रा गैस एजेंसी से 26 अतिरिक्त कमर्शियल सिलेंडर जब्त

बहादुरगढ़ 18 मार्च। क्षेत्र में गैस की कालाबाजारी संबंधी लगातार मिल रही शिकायतों पर संज्ञान लेते हुए एसडीएम अभिनव सिवाच ने बुधवार को फिर से खाद्य एवं आपूर्ति विभाग की टीम के साथ विभिन्न गैस एजेंसियों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों का औचक निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान टीम ने वीरेंद्रा गैस एजेंसी पर छापेमारी की, जहां स्टॉक रिकॉर्ड से अधिक 26 कमर्शियल गैस सिलेंडर पाए गए। नियमों के उल्लंघन पर इन सिलेंडरों को खाद्य आपूर्ति विभाग द्वारा मौके पर ही जब्त कर लिया गया।

एसडीएम अभिनव सिवाच ने स्पष्ट किया कि क्षेत्र में गैस की कालाबाजारी किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों व संस्थानों के खिलाफ

नियमानुसार सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि नियमित रूप से निरीक्षण अभियान जारी रखें, ताकि उपभोक्ताओं को निर्धारित दरों पर गैस उपलब्ध हो सके और किसी प्रकार की अनियमितता पर तुरंत कार्रवाई की जा सके। इस अवसर पर खाद्य एवं आपूर्ति विभाग की ओर से एएफएसओ सपना देवी, इंस्पेक्टर राजेश सहगल, उप निरीक्षक धर्मपाल तथा राकेश सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

रबी फसल उत्पाद की खरीद की तैयारियां समय पर पूरी करें : उपायुक्त मंडियों और खरीद केंद्रों पर मौजूदा व्यवस्थाओं की समीक्षा की

झज्जर, 18 मार्च। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने रबी खरीद सीजन 2026 की तैयारियों को लेकर आयोजित समीक्षा बैठक में कहा कि प्रशासनिक और विभागीय स्तर पर तैयारियों को समय पर पूरा करें।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि खरीद प्रक्रिया को पारदर्शी, सुचारू एवं समयबद्ध ढंग से संचालित किया जाए, ताकि किसानों को खरीद केंद्र पर किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

बैठक में जिला खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले नियंत्रक द्वारा उपायुक्त को अवगत कराया गया कि भारत सरकार द्वारा गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2585 रुपये प्रति क्विंटल तथा सरसों का 6200 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है।

उन्होंने बताया कि जिले में गेहूं की खरीद के लिए झज्जर, बेरी, मातनहेल, माजरा दूबलधन, बहादुरगढ़, पाटोदा, आसौदा, बादली तथा ढाकला सहित कुल 10 मंडियां निर्धारित की गई हैं, जबकि सरसों की खरीद के लिए झज्जर,

बेरी, मातनहेल, पाटोदा, बादली एवं बहादुरगढ़ मंडियों में व्यवस्था की गई है।

डीएफएससी ने बताया कि सभी मंडियों के लिए लेबर एवं परिवहन से संबंधित टेंडर प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है। किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मंडियों में आने वाले वाहनों पर फ्रंट नंबर प्लेट स्पष्ट होना अनिवार्य किया गया है। गेट पास जारी करने का समय प्रातः 6 बजे से रात्रि 8 बजे तक निर्धारित किया गया है तथा फोटो सत्यापन अनिवार्य रहेगा। इसके अतिरिक्त सभी किसानों के लिए बायोमेट्रिक सत्यापन एवं रमेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर पंजीकरण अनिवार्य किया गया है।

उपायुक्त ने सभी मार्केट कमेटी सचिवों को निर्देश दिए कि खरीद सीजन शुरू होने से पहले मंडियों में पेयजल, सफाई, बिजली, शौचालय, सड़कों की मरम्मत तथा शेडों की उचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उन्होंने जिला नियंत्रक को निर्देश दिए कि मंडियों के समीप स्थित सभी धर्मकांटों का निरीक्षण कर उनका कैलिब्रेशन करवाया जाए, ताकि माप-तौल प्रक्रिया पूर्णतः निष्पक्ष बनी रहे।

उन्होंने उपमंडल अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे नियमित रूप से मंडियों का निरीक्षण करें और व्यवस्थाओं की सतत निगरानी रखते हुए किसानों को किसी भी प्रकार की असुविधा न होने दें।

ई-गिरदावरी व डिजिटल फसल सर्वेक्षण कार्य में तेजी लाएं अधिकारी : डीसी

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने ई-गिरदावरी एवं डिजिटल फसल सर्वेक्षण की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस कार्य को निर्धारित समयसीमा में पूर्ण किया जाए। उन्होंने सर्वेक्षण में सटीकता एवं पारदर्शिता सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया।

उन्होंने कहा कि फील्ड स्तर पर प्रत्येक खेत एवं फसल का सही विवरण दर्ज किया जाए तथा प्रगति की नियमित निगरानी की जाए। जहां कार्य की गति धीमी है, वहां विशेष ध्यान देते हुए आवश्यक कदम उठाए जाएं।

उपायुक्त ने तकनीकी समस्याओं के त्वरित समाधान, विभागों के बीच बेहतर समन्वय तथा किसानों को जागरूक करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि यह डाटा भविष्य में कृषि योजनाओं, फसल बीमा एवं मुआवजा वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस अवसर पर एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे, एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, एसडीएम बादली डॉ. रमन गुप्ता, डीएफएससी राजेश्वर मुदगिल सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

विकास परियोजनाओं को लेकर केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी से मिले कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा

हरियाणा हिसार: राजेश सलूजा

हरियाणा के लोक निर्माण (भवन एवं सड़क) तथा जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा ने केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से मुलाकात कर सड़क एवं आधारभूत ढांचे के विकास को लेकर महत्वपूर्ण चर्चा की।

उन्होंने केंद्रीय मंत्री को हरियाणा सरकार द्वारा आयोजित किए जा रहे दो दिवसीय राष्ट्रीय आई.आर.सी (इंडियन रोड्स कांग्रेस) सेमिनार के उद्घाटन के लिए औपचारिक निमंत्रण भी दिया। मुलाकात के दौरान कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने हरियाणा में राष्ट्रीय राजमार्गों के विस्तार, सड़क नेटवर्क के सुदृढ़ीकरण तथा आधुनिक परिवहन सुविधाओं के विकास के लिए केंद्र सरकार से सहयोग का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में तेजी से बढ़ रहे शहरीकरण और औद्योगिक विकास को देखते हुए आधारभूत ढांचे को और मजबूत करने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में सकारात्मक बातचीत हुई, जिसमें हरियाणा की सड़कों एवं विभिन्न हाईवे परियोजनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। उन्होंने विश्वास जताया कि इन परियोजनाओं को आगे बढ़ाने में केंद्र सरकार का पूरा सहयोग मिलेगा। कैबिनेट मंत्री ने वर्तमान में राज्य में चल रही एवं भविष्य की प्रस्तावित परियोजनाओं को गति देने के लिए केंद्र सरकार से विशेष अनुदान उपलब्ध कराने का भी अनुरोध किया, ताकि विकास कार्यों को समयबद्ध तरीके से पूरा किया जा सके। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी के नेतृत्व में देश में सड़क अवसंरचना के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है और सड़क सुरक्षा को लेकर भी कई प्रभावी पहल की गई हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि केंद्र और राज्य सरकार के समन्वय से हरियाणा में विकास कार्यों को नई गति मिलेगी और प्रदेश को इसका व्यापक लाभ प्राप्त होगा।

समाधान शिविरों के माध्यम से प्रशासन करेगा सीधा संवाद, मौके पर होगा निपटान : डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल

बहादुरगढ में समाधान शिविर की अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल करेंगे।

झज्जर, 18 मार्च। जनता की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा गुरुवार 19 मार्च को जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। ये शिविर प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक लगाए जाएंगे, जहां नागरिकों की शिकायतों का मौके पर ही समाधान सुनिश्चित किया जाएगा। जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन लघु सचिवालय, झज्जर के कॉन्फ्रेंस हॉल में किया जाएगा, दौरान विभागों से संबंधित शिकायतें सुनेंगे तथा संबंधित अधिकारियों को समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश देंगे, ताकि आमजन को अनावश्यक भागदौड़ से राहत मिल सके। उपमंडल स्तर पर भी संबंधित लघु सचिवालय परिसरों में समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। बहादुरगढ में समाधान शिविर की अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल करेंगे।, बेरी में एसडीएम रेणुका नांदल तथा बादली में एसडीएम डॉ. रमन गुप्ता की अध्यक्षता में शिविर लगाए जाएंगे। इन शिविरों में प्राप्त शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटान किया जाएगा। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि समाधान शिविर प्रशासन और नागरिकों के बीच सीधा संवाद स्थापित करने का एक प्रभावी माध्यम हैं। उन्होंने बताया कि जिला मुख्यालय में ऐसे शिविर प्रत्येक सप्ताह नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, जिनमें विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहते हैं, ताकि नागरिकों को एक ही स्थान पर उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान मिल सके।

शिक्षा जीवन मूल्यों को सीखने की सतत प्रक्रिया: स्वप्न कुमार मंडल

बाल भारती पब्लिक स्कूल में प्री-प्राइमरी का वार्षिकोत्सव एवं ग्रेजुएशन डे धूमधाम से मनाया गया

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर,छत्तीसगढ़। एनटीपीसी, सीपत स्थित बाल भारती पब्लिक स्कूल में 15 मार्च 2026 को प्री-प्राइमरी वर्ग के नन्हे विद्यार्थियों के लिए वार्षिकोत्सव एवं ग्रेजुएशन डे का भव्य एवं गरिमामयी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का थीम 'तरंग एवं गुंजन (Waves and Whispers)' रखा गया, जिसका उद्देश्य बच्चों में उत्साह, आत्मविश्वास तथा सृजनात्मकता के साथ सीखने की प्रेरणा विकसित करना था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एनटीपीसी सीपत के परियोजना प्रमुख स्वप्न कुमार मंडल तथा विशिष्ट अतिथि संगवारी महिला समिति की अध्यक्षा शिखा मंडल रहीं। इस अवसर पर अन्य गणमान्य अतिथिगण एवं अभिभावक भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ।

विद्यालय के प्राचार्य शलभ निगम ने अतिथियों का स्वागत करते हुए सत्र (2025–26) का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा विद्यालय की शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस दौरान नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने मनमोहक नृत्य एवं रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से सभी का मन मोह लिया।

अपने उद्बोधन में स्वप्न कुमार मंडल ने कहा कि यह दिन इन नन्हे विद्यार्थियों के लिए गर्व का क्षण है। उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल कक्षा पूर्ण करने का नाम नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों को सीखने और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की सतत प्रक्रिया है। उन्होंने विद्यालय के समर्पित शिक्षकों के धैर्य, प्रेम और स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि उनके प्रयासों ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव रखी है। साथ ही उन्होंने अभिभावकों के विश्वास, सहयोग और प्रोत्साहन को भी बच्चों के समग्र विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण बताया।

समारोह के अंतर्गत विद्यार्थियों को पारंपरिक दीक्षांत परिधान धारण कराकर प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। अंत में आभार प्रदर्शन एवं राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का सफल समापन हुआ।

राजधानी दिल्ली का पालम इलाका बुधवार की सुबह चीख-पुकार और काले धुएं के आगोश में समा गया.

नवदीप सिंह

दरअसल, साध नगर की गली नंबर-2 में स्थित चार मंजिला बिल्डिंग भीषण आग लग गई. सुबह करीब 6:30 बजे जब आग लगी, तो बिल्डिंग के अंदर काफी लोग सोए हुए थे. अंदर फंसे परिवार के पास बचने का कोई रास्ता नहीं था. बाहर निकलने का बस एक ही रास्ता था, उसमें भी आग लगी हुई थी. आलम ये था कि कमरों में दम घोंटू धुआं भर गया. आगजनी के हादसे में 9 लोगों की मौत हो गई.

यह है नारी सशक्तिकरण शेफाली बड़ी दीदी अपने विचार पुष्प को अर्पित किया

नवदीप सिंह , सिविल लाइन शाह ऑडिटोरियम मोमेंट्स डे हमने बुक वितरण किया और अंग वस्त्र चेन्नई से सभी का स्वागत किया रणजीत नगर राजकुमारी समाजसेवी का नाड़ी क्या नहीं कर सकती धरती से लेकर आसमान तक की सफल बनाती है रिक्शा से लेकर एयरप्लेन तक चलती है परिवार समाज देश राष्ट्रीय सभी को संजोती है यह मेरी आवाज है कि अगर नारी शक्ति है तो पुरुष भी कम नहीं है कुबेर काखजाना है इसलिए साथ रहे मिलकर रहे स्वस्थ रहे प्यार से ।

रिफ्यूजी या शरणार्थी कहने वालों को हो सजा का प्रावधान : डॉ. मिड्ढा

राजेश सलूजा

बरवाला जिला हिसार

भारत-पाकिस्तान के विभाजन की विभीषिका को जिसने झेला हो, भरे-पूरे परिवार को टूटते-बिखरते देखा हो, बेहद मुश्किल हालात सहे हों, देश सहा हो... वह ही समझ सकता है कि शरणार्थी होने का दर्द क्या होता है। हरियाणा विधानसभा के बजट सत्र के दौरान सोमवार को सदन में पहले अंबाला शहर के विधायक असीम गोयल ने रिफ्यूजी और पाकिस्तानी शरणार्थी शब्द पर विचार रखे और ऐसे शरणार्थियों को "पुरुषार्थी समाज" कहने की मांग उठाई और बाद में इस शब्द की विस्तृत व्याख्या करते हुए जींद के विधायक डॉ. कृष्ण मिड्ढा ने सदन में जो कुछ कहा, वो कई लोगों के दिलों को छू गया।

डॉ. मिड्ढा ने सदन में मांग की कि सरकार द्वारा एक ऐसा एक्ट बनाया जाए कि धर्म की रक्षा के लिए विभाजन के समय हिंदुस्तान में आए लोगों को जो व्यक्ति पाकिस्तानी या रिफ्यूजी या शरणार्थी कहकर पुकारे, उसे सजा दी जाए।

डॉ. मिड्ढा ने कहा कि जो आज पाकिस्तान है, वहां हम लोग रहा करते थे। सन 1947 में जो गदर उठा, उससे सब लोग वाकिफ हैं। लगभग 10 लाख लोगों की जान गई। बहुत से लोगों ने धर्म की रक्षा के लिए और दूसरे धर्म को न अपनाना पड़े, इसलिए अपनी सरजमीं छोड़कर हिंदुस्तान में आने का काम किया। अगर हम देखें तो हमारे पूर्वजों ने हमारी बहन-बेटियों की इज्जत बचाने के लिए अपने ही हाथों अपनी बच्चियों को जहर देकर मारने का काम किया, ये बात कही गई ताकि धर्म जिंदा रहे।

इसीलिए वह यहां आकर बसे, उन्हें हर प्रकार का छोटा काम करना पड़ा, बच्चों और परिवार को पालना पड़ा। लेकिन फिर भी हम लोगों को रिफ्यूजी और शरणार्थी कहा जाता है, लेकिन रिफ्यूजी हम लोग नहीं हैं। ऐसा नहीं है कि सिर्फ पंजाबी समुदाय के लोग उस क्षेत्र से वहां से यहां आए। ऐसा नहीं कि वहां किसी कस्बे में एक ही जाति के लोग रहा करते थे, वहां प्रत्येक जाति के लोग रहा करते थे। जाट समुदाय से संबंधित लोग राजस्थान में शिफ्ट हो गए। अग्रवाल से संबंधित लोग गुजरात में बस गए। पंजाबी जो लोग थे, वो पंजाब और हरियाणा में बस गए।

डॉ. मिड्ढा ने सदन में कहा कि पंजाब के उपद्रव के समय बहुत से लोग हरियाणा और दिल्ली में आकर शिफ्ट हो गए, क्या उन्हें रिफ्यूजी कहा जाएगा। वह एक ही देश के बाशिंदे थे, उसी तरह हम भी यहां आए तो क्या रिफ्यूजी हो गए। उन्होंने कहा कि बहुत से लोगों को तो अपनी कुलदेवी का भी पता नहीं होगा, क्योंकि हमारी हीलालज माता हमारी कुलदेवी हैं, जिनके बारे में कभी जिक्र आता ही नहीं, कोई इस पर चर्चा करता ही नहीं।

मिड्ढा ने कहा कि वह सरकार से मांग करते हैं कि इस बारे में सख्त से सख्त प्रावधान बनाया जाए। अपनी बात रखते हुए मिड्ढा ने विपक्ष में बैठे कांग्रेसी विधायकों की ओर एक शेर भी पढ़कर सुनाया, हौसलेमंद लोगों का हुनर निकलते सब लोगों ने देख लिया, जरा सी बात पर आपको बिखरते देख लिया, आप अपना दर्द सुनाने के बहाने न ढूंढे, आपकी बातों से सत्ता से दूर होने का दुख देख लिया।

सरकारी कर्मचारियों को रिटायर्मेंट के बाद पेशन क्यों नहीं:....?

राष्ट्र निर्माता और जनता के भाग्य-विधाता, समाजसेवी कहलाने वालों की कथनी और करनी में जमीन और आसमान का अंतर अब जनता को सीधे-सीधे दिखाई पड़ रहा है। क्योंकि अपने जीवन के अमूल्य पल कर्तव्य निर्वाहन और राष्ट्रहित मे सरकार की साठ वर्ष तक सेवा करने के उपरांत भी सरकारी कर्मचारियों को रिटायर्मेंट के बाद पेशन क्यों नहीं दी जा रही है.... ? जिससे वह अपने बुढ़ापे का जीवन निर्वाहन सुचारू रूप से कर सके और किसी के आगे उसे झुकना ना पड़े। लेकिन बड़े अफसोस के साथ यह कहना पड़ रहा है, की आखिरकार मतदाता को क्या मिलता है..... ?

मतदान के बाद सिर्फ एक सामाजिक लड़ाई और बुराई। कभी-कभी तो मतदान के दौरान खूनी संघर्षपूर्ण माहौल भी बन जाता है और बुराइयां चुनाव परिणाम आने के बाद भी बनी रहती हैं, एक तरफ जनप्रतिनिधि की सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा सुरक्षा मुहैया कराई जाती है। वहीं मतदाता जनप्रतिनिधि के को भोजन का शिकार भी हो जाता है यह कहकर तुमने मुझे वोट नहीं दिया। ₹प्रश्न या नहीं हैर चुनाव जीतने के बाद जनप्रतिनिधि की पांच पुस्ते राज करती हैं। पक्ष और विपक्ष दोनों सरकार की टांग समय पर कैसे नजर आते हैं.... ?

परंतु जनता की आवाज और दुख दर्द जन प्रतिनिधिमंडल खामोश नजर आता है, जितनी बार जनप्रतिनिधि बने उतनी बार पेंशन का प्रावधान सरकार ने बना रखा है, लेकिन एक और सरकारी कर्मचारी को रिटायरमेंट के बाद पेंशन, मेडिकल, किफ़ायती यात्रा, आजीविका चलाने के लिए कोई प्रावधान क्यो नहीं है.... ? क्योंकि सरकार और जनप्रतिनिधि अब सरकारी नौकरी के नाम से शिक्षित बेरोजगार युवाओं को केवल संविदा कर्मचारी के रूप मे भर्ती कि जा रही हैं ताकि उन्हें किसी प्रकार की कोई सुविधा रिटायरमेंट के बाद ना दी जा सके। क्योंकि नेताजी का पेट स्वयं का इतना बड़ा है, कि दूसरे के बारे में उन्हें सोचने का समय ही नहीं मिलता।

✍ भूपेंद्र सारस्वत 'सारथी'!

हिंदू नववर्ष हमारी संस्कृति की आत्मा का उत्सव है : चारू चौधरी

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर ।भोजपुरी एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया "भाई" द्वारा विजय चौक स्थित एक होटल में हिंदू नववर्ष की पूर्व संध्या पर एक भव्य सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें लोकसंस्कृति, संगीत और भारतीय परंपरा का सुंदर समागम देखने को मिला। कार्यक्रम का शुभारंभ उत्तर प्रदेश महिला आयोग की उपाध्यक्ष श्रीमती चारू चौधरी, भारतीय जनता पार्टी के क्षेत्रीय अध्यक्ष सहजानंद राय, जिला हॉकी संघ के अध्यक्ष मनीष सिंह, पूर्व महापौर डॉ. सत्या पांडेय, दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री पुष्पदंत जैन, वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. रूप कुमार बनर्जी, रवीश मिश्रा, सुधा मोदी,दिनेश त्रिपाठी, ध्रुव श्रीवास्तव एवं प्रगति श्रीवास्तव द्वारा दीप प्रज्ज्वलन तथा भारत माता के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया।

विशिष्ट अतिथि श्रीमती चारू चौधरी ने कहा कि हिंदू नववर्ष हमारी संस्कृति की आत्मा का उत्सव है। यह पर्व हमें नारी शक्ति, संस्कार, परिवार और समाज के प्रति अपने दायित्वों को नई ऊर्जा के साथ निभाने की प्रेरणा देता है।"

मुख्य अतिथि सहजानंद ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदू नववर्ष भारतीय सभ्यता के गौरव, सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्र निर्माण के संकल्प का प्रतीक है। यह अवसर हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहकर नए भारत के निर्माण हेतु आगे बढ़ने का संदेश देता है।"

इस अवसर पर राकेश मोहन ने सभी अतिथियों का पटका ओढ़ाकर आत्मीय स्वागत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ लोकगायिका नीतू श्रीवास्तव द्वारा देवी गीत की भावपूर्ण प्रस्तुति से हुआ। इसके बाद वीरसेन सूफी एवं पवन पंछी द्वारा प्रस्तुत चैता ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। अंचल आनंद के निर्देशन में सिंहायना आनन्द, एवं स्मेरा आनन्द द्वारा नववर्ष स्वागत नृत्य की प्रस्तुति ने वातावरण को उल्लासमय बना दिया।

विमल चतुर्वेदी के गीतों तथा सुभाष यादव एवं प्रमोद चोखानी की रचनाओं का उपस्थित जनसमूह ने भरपूर आनंद लिया। इस अवसर पर युवा गायक प्रदीप सिंह द्वारा गाए गए गीत "योगी जी नाम गूंजे घरे-घरे" के पोस्टर तथा प्रमोद चोखानी द्वारा संकलित पुस्तक "भजन रसपान" का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया।

भोजपुरी एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया "भाई" के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राकेश श्रीवास्तव को उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार हेतु नामित होने पर उपस्थित अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। यह क्षण उपस्थित जनसमूह के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण रहा।

कार्यक्रम का संचालन शिवेंद्र पांडेय ने प्रभावपूर्ण ढंग से किया। वाद्य यंत्रों पर त्रिपुरारी मिश्रा, श्याम सुंदर हंसलोना, बंटी बाबा तथा अंकुश ने अपनी संगत से कार्यक्रम को और ऊँचाई प्रदान की।

दुबई अंतर्राष्ट्रीय मंच द्वारा डॉ. दीपाली जी को हिंदी गौरव सम्मान

परिवहन विशेष न्यूज

गुलबर्गा ज़िला के चित्तापुर govt. डिग्री कॉलेज की अतिथि सहायक प्राध्यापिका डॉ . दीपाली डी मिरेकर जी को हिंदी साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए अंतरराष्ट्रीय हिंदी गौरव सम्मान दिया गया। यह सम्मान संस्था साहित्य अर्पण अंतरराष्ट्रीय मंच दुबई ने प्रदान किया। दीपाली जी के साथ देशभर के विशिष्ट 314 साहित्यकारों, शिक्षकों व लेखकों को हिंदी भाषा के प्रति सेवाओं के लिए इस सम्मान से अलंकृत किया.

दिपाली जी वृति से हिंदी की अध्यापिका है। इन्होंने हिंदी, कन्नड़ और मराठी भाषाओं में कविताएं लिखीं है। विभिन्न उच्च स्तरीय मंचों पर और विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों द्वारा अपना काव्य पाठ प्रस्तुत किया है ।इनकी अनेक कविताएं इ -बुक, समाचार पत्र, मासिक पत्रिका, वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड लंडन आदि में प्रकाशित होती रही है। विभिन्न विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों में इनके अनेक आलेख प्रकाशित है। इनको योग साधिका सम्मान, शिक्षा रत्न सम्मान 2021, कोंच साहित्य गौरव सम्मान, नारी शक्ति सम्मान आदि प्राप्त हुए है। वर्तमान में वे गुलबर्गा , कर्नाटक में निवासरत हैं। दीपाली जी की इस उपलब्धि पर उनके परिजनों ने हर्ष जताया।

50 वार्ड पार्षदो का वोट उप मेयर के चुनाव मे अरूण कुमार नोनिया को मिला

धनबाद, धनबाद नगर निगम के मेयर पद पर संजीव सिंह (पूर्व विधायक) और उप मेयर पद पर अरूण कुमार नोनिया विजय हुये है 55 वार्ड पार्षद मे लगभग 50 वार्ड पार्षदो का वोट उप मेयर के चुनाव मे अरूण कुमार नोनिया को मिला है। झारखण्ड राज्य नोनिया महा संघ के अध्यक्ष रामा शीष चौहान की ओर से धनबाद नगर निगम वार्ड नम्बर 7 के सभी मत दाता गण और सभी पार्षद गण को जीत दिलाने मे जो अहम भूमीका निभाये है इसके लिये हार्दिक शुभ कामनाओ के साथ उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। भाई संजीब सिंह और भाई अरूण कुमार नोनिया के नेतृत्व मे धनबाद का विकास होगा । मुझे आशा ही नही पुर्ण विश्वास है। झारखण्ड के ईतिहास मे नोनिया समाज का बेटा पहली किसी बडे पद पर जित की सफलता पाये है,ईस जित के लिये भाई संजीब सिंह , नव निर्वाचीत मेयर सहब के सहयोग करने के लिये सम्पुर्ण नोनिया, बिन्द,बेलदार,निषाद समाज की ओर से हार्दिक शुभ कामनाये के साथ,साथ उज्जवल भविष्य की कामना करते है। संजय चौहान,मोहन चौहान,वकील बेलदार ,दशरथ नोनिया,योगेश्वर नोनिया,बिजय नोनिया,अर्जुन प्रसाद, दिनेश प्रसाद,सीता देवी,रीता कुमारी विन्दू चौहान

वैज्ञानिकों ने मानव मस्तिष्क के साथ संवाद करने में सक्षम पहला कृत्रिम न्यूरॉन बनाया

● डॉ. विजय गर्ग

मानव मस्तिष्क में लगभग 86 बिलियन न्यूरॉन्स होते हैं, जो छोटे विद्युत और रासायनिक संकेतों के माध्यम से एक दूसरे से संवाद करते हैं। ये संकेत हमें सोचने, महसूस करने, हिलने-डुलने और सूचना को संसाधित करने की अनुमति देते हैं। कृत्रिम प्रणालियों में ऐसे जटिल संचार को दोहराना लंबे समय से वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती रही है। कंप्यूटर में प्रयुक्त पारंपरिक कृत्रिम न्यूरॉन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रयुक्त गणितीय मॉडल हैं। हालाँकि, वे जैविक कोशिकाओं के साथ शारीरिक रूप से बातचीत नहीं करते हैं। वैज्ञानिक भौतिक कृत्रिम न्यूरॉन्स बनाने के तरीके खोज रहे हैं जो वास्तविक मस्तिष्क कोशिकाओं की तरह व्यवहार करते हैं।

एक उल्लेखनीय वैज्ञानिक सफलता में, शोधकर्ताओं ने पहला कृत्रिम न्यूरॉन विकसित किया है जो जीवित कोशिकाओं के साथ सीधे संवाद करने में सक्षम है, और यह भविष्य की प्रौद्योगिकियों की ओर एक बड़ा कदम है जो इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को मानव मस्तिष्क से जोड़ सकती हैं। यह प्रगति तंत्रिका विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, चिकित्सा और पहनने योग्य प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों को बदल सकती है।

न्यूरॉन्स और मानव मस्तिष्क को समझना

मानव मस्तिष्क में लगभग 86 बिलियन न्यूरॉन्स होते हैं, जो छोटे विद्युत और रासायनिक संकेतों के माध्यम से एक दूसरे से संवाद करते हैं। ये संकेत हमें सोचने, महसूस करने, हिलने-डुलने और सूचना को संसाधित करने की अनुमति देते हैं। कृत्रिम प्रणालियों में ऐसे जटिल संचार को दोहराना लंबे समय से वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती रही है।

कंप्यूटर में प्रयुक्त पारंपरिक कृत्रिम न्यूरॉन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रयुक्त गणितीय मॉडल हैं। हालाँकि, वे जैविक कोशिकाओं के साथ शारीरिक रूप से बातचीत नहीं करते हैं। वैज्ञानिक भौतिक कृत्रिम न्यूरॉन्स बनाने के तरीके खोज रहे हैं जो वास्तविक मस्तिष्क कोशिकाओं की तरह व्यवहार करते हैं।

क्रांतिकारी कृत्रिम न्यूरॉन

मैसाचुसेट्स एम्हर्स्ट विश्वविद्यालय के इंजीनियरों की एक टीम ने सफलतापूर्वक कृत्रिम न्यूरॉन्स विकसित किए हैं, जो जैविक न्यूरॉन के विद्युत व्यवहार का निकटता से अनुकरण करते हैं। ये कृत्रिम न्यूरॉन्स बैक्टीरिया द्वारा उत्पादित प्रोटीन नैनोवायर का उपयोग करके बनाए जाते हैं और मानव तंत्रिका कोशिकाओं में प्रयुक्त विद्युत संकेतों के समान अत्यंत कम वोल्टेज पर काम करते हैं।

चूंकि वोल्टेज वास्तविक न्यूरॉन्स के समान है, इसलिए कृत्रिम न्यूरॉन जीवित कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाए बिना या जटिल इलेक्ट्रॉनिक प्रवर्धन प्रणालियों की आवश्यकता के बिना उनसे संवाद कर सकता है।

शोधकर्ताओं ने प्रदर्शित किया कि ये कृत्रिम न्यूरॉन्स जीवित जैविक कोशिकाओं के साथ सीधे बातचीत कर सकते हैं, जिससे इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियां शरीर के प्राकृतिक कोशिकीय नेटवर्क से बात कर सकती हैं।

कम वोल्टेज क्यों मायने रखता है

इलेक्ट्रॉनिक्स को मानव शरीर से जोड़ने में सबसे बड़ी चुनौती विद्युत संकेतों में अंतर है।

मानव न्यूरॉन्स मिलीवोल्ट के स्तर पर काम करते हैं।

कई कृत्रिम प्रणालियों के लिए बहुत अधिक वोल्टेज की आवश्यकता होती है।

उच्च वोल्टेज नाजुक जैविक कोशिकाओं को बाधित या नुकसान पहुंचा सकता है।

नवविकसित कृत्रिम न्यूरॉन लगभग 0.1 वोल्ट पर काम करता है, जो प्राकृतिक तंत्रिका गतिविधि के करीब होता है, जिससे प्रत्यक्ष संचार संभव हो जाता है।

संभावित अनुप्रयोग

इस सफलता से कई क्रांतिकारी प्रौद्योगिकियां विकसित हो सकती हैं

1।ब्रेनलिफ्ट कंप्यूटर इंटरफेस

कृत्रिम न्यूरॉन्स मस्तिष्क के साथ सीधे संवाद करने वाले उपकरणों को सक्षम बना सकते हैं, जिससे पक्षाघात से पीड़ित लोगों को कंप्यूटर या कृत्रिम अंगों को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है।

2।उन्नत चिकित्सा प्रत्यारोपण

भविष्य में प्रत्यारोपण निम्नलिखित तंत्रिका संबंधी रोगों का उपचार कर सकता है

पार्किंसंस रोग

मिरगी

रीढ़ की हड्डी में चोटें

ये प्रत्यारोपण खोई हुई तंत्रिका संचार को बहाल कर सकते हैं।

3। अति-कुशल जैव-प्रेरित कंप्यूटर

वैज्ञानिकों का मानना है कि न्यूरॉन जैसे घटकों के साथ डिजाइन किए गए कंप्यूटर आधुनिक एआई प्रणालियों की तुलना में बहुत कम ऊर्जा खपत कर सकते हैं, जबकि सूचना को मानव मस्तिष्क की तरह संसाधित करते हैं।

4।पहनने योग्य स्वास्थ्य सेंसर

नए सेंसर भारी इलेक्ट्रॉनिक्स के बिना सीधे शरीर से आने वाले संकेतों को पढ़ सकते हैं, जिससे स्वास्थ्य निगरानी उपकरण अधिक स्मार्ट हो जाएंगे।

चुनौतियां और नैतिक प्रश्न

उत्साह के बावजूद, यह तकनीक अभी भी अपने प्रारंभिक चरण में है। शोधकर्ताओं को कई चुनौतियों का सामना करना होगा

कृत्रिम न्यूरॉन्स की दीर्घकालिक स्थिरता

मानव चिकित्सा अनुप्रयोगों में सुरक्षा

मस्तिष्क-मशीन अंतःक्रिया के बारे में नैतिक प्रश्न

तंत्रिका डेटा से संबंधित गोपनीयता संबंधी चिंताएं

वैज्ञानिकों का कहना है कि इन प्रणालियों को सुरक्षित रूप से स्थापित करने या व्यापक रूप से उपयोग में लाने से पहले और अधिक शोध की आवश्यकता है।

मस्तिष्क-मशीन एकीकरण का भविष्य

जीवित कोशिकाओं के साथ संवाद करने में सक्षम कृत्रिम न्यूरॉन्स का निर्माण जैव-इलेक्ट्रॉनिक एकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जैसे-जैसे अनुसंधान आगे बढ़ता है, यह प्रौद्योगिकी अंततः मनुष्य को कंप्यूटर के साथ उन तरीकों से बातचीत करने की अनुमति दे सकती है जिनकी कल्पना पहले केवल विज्ञान कथाओं में ही की जाती थी।

यदि जिम्मेदारी से विकसित किया जाए, तो कृत्रिम न्यूरॉन्स चिकित्सा, कंप्यूटिंग और मानव-मशीन अंतःक्रिया में क्रांति ला सकते हैं, जिससे हम उस भविष्य के करीब पहुंच जाएंगे, जहां प्रौद्योगिकी और जीव विज्ञान एक साथ सहजता से काम करते हैं।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री

नई ऊर्जा चुनौतियां एवं उम्मीदें लेकर आया है नव संवत्सर 2083

डॉ घनश्याम बादल

भले ही आज दुनिया ईस्वी सन के हिसाब से चल रही है और हम 2026 में रह रहे हैं लेकिन आज भी दुनिया भर में हिंदू नव वर्ष संवत्सर की महत्ता अलग ही है।

भारतीय कालगणना की परंपरा में नव संवत्सर का विशेष महत्व है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होने वाला यह नववर्ष केवल तिथि परिवर्तन नहीं, बल्कि प्रकृति, समाज और चेतना के नवोदय का प्रतीक है।

आज से हो रहा शुरू

इस वर्ष 19 मार्च से विक्रम संवत 2083 का आरंभ हो रहा है, जो अपने साथ नई ऊर्जा, चुनौतियाँ और संभावनाएँ लेकर आया है। यह संवत्सर न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार इसके अपने विशेष संकेत और प्रभाव भी होते हैं।

नाम, राजा और मंत्री

भारतीय पंचांग के अनुसार प्रत्येक नव संवत्सर का एक नाम, राजा, मंत्री और अन्य पद निर्धारित होते हैं, जो पूरे वर्ष की दिशा और दशा का संकेत देते हैं। इस वर्ष का संवत्सर नाम रनलर माना जा रहा है। "नल" संवत्सर को पारंपरिक रूप से संतुलन, संघर्ष और पुनर्निर्माण का वर्ष माना जाता है। यह वर्ष ऐसे समय का संकेत देता है जब व्यक्ति और समाज दोनों को अपनी कमजोरियों से जूझते हुए नए मार्ग तलाशने पड़ते हैं।

ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार इस वर्ष के राजा सूर्य माने गए हैं, जबकि मंत्री शनि हैं। राजा सूर्य का होना शासन, सत्ता, प्रशासन और नेतृत्व में कठोरता, स्पष्टता और निर्णायकता का संकेत देता है। वहीं मंत्री के रूप में शनि का होना इस बात का संकेत है कि निर्णयों में गंभीरता, न्यायप्रियता और कभी-कभी विलंब भी देखने को मिल सकता है। सूर्य और शनि का यह संयोजन विरोधाभासी होने के बावजूद एक प्रकार का संतुलन भी उत्पन्न करता है - जहां एक ओर तेज और शक्ति है, वहीं दूसरी ओर अनुशासन और कर्मफल का सिद्धांत भी प्रभावी रहेगा।

क्या करेगा यह वर्ष

इस नव संवत्सर के प्रमुख लक्षणों पर दृष्टि डालें तो यह वर्ष कई स्तरों पर परिवर्तनकारी दिखाई देता है। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष उतार-चढ़ाव भरा रह सकता है। जहां एक ओर कुछ क्षेत्रों में तीव्र विकास होगा, वहीं दूसरी ओर महंगाई और संसाधनों की असमानता जैसी समस्याएं भी उभर सकती हैं। कृषि क्षेत्र के लिए यह वर्ष सामान्य से बेहतर माना जा रहा है, हालांकि मौसम की अनिश्चितता किसानों के लिए चुनौती बनी रह सकती है।

क्या हैं राजनीतिक एवं सामाजिक प्रभाव

राजनीतिक दृष्टि से यह वर्ष निर्णायक और सक्रिय रहने वाला है। सूर्य के प्रभाव के कारण सत्ता पक्ष अधिक सशक्त और आक्रामक दिखाई देगा, जबकि शनि के प्रभाव से विपक्ष भी अपनी भूमिका मजबूती से निभाने का प्रयास करेगा। इससे लोकतांत्रिक विमर्श में तीखापन बढ़ सकता है, लेकिन अंततः यह संतुलन की दिशा में ही जाएगा।

सामाजिक स्तर पर यह वर्ष जागरूकता और आत्ममंथन का संकेत देता है। समाज में नैतिक मूल्यों, पारिवारिक संरचना और सांस्कृतिक पहचान को लेकर चर्चा बढ़ेगी। लोग अपनी जड़ों की ओर लौटने और परंपराओं को पुनः स्थापित करने का प्रयास करेंगे। साथ ही, युवा वर्ग में नई सोच और नवाचार की प्रवृत्ति भी बढ़ेगी।

क्या कहती है भविष्यवाणी

यदि भविष्यवाणियों की बात करें तो इस वर्ष प्राकृतिक घटनाओं में कुछ असामान्यता देखने को मिल सकती है। कहीं अधिक वर्षा तो कहीं सूखे जैसी स्थितियां बन सकती हैं। भूकंप, तूफान या अन्य प्राकृतिक आपदाओं की संभावना को भी पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता। यह संकेत देता है कि मानव को प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलने की आवश्यकता है।

कैसा रहेगा भारत और विश्व के लिए

भारत के संदर्भ में यह वर्ष मिश्रित परिणाम देने वाला माना जा रहा है। आर्थिक सुधारों की दिशा में कुछ ठोस कदम उठाए जा सकते हैं, जिससे दीर्घकालीन लाभ मिलेगा। तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों में भारत की स्थिति और मजबूत हो सकती है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की भूमिका और प्रभाव बढ़ने के संकेत हैं, लेकिन साथ ही पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में कुछ तनाव भी उत्पन्न हो सकता है।

विश्व स्तर पर यह वर्ष अस्थिरता और पुनर्संतुलन का प्रतीक हो सकता है। वैश्विक राजनीति में नए समीकरण बन सकते हैं। कुछ देशों के बीच तनाव बढ़ सकता है, वहीं कुछ नए गठबंधन भी उभर सकते हैं। आर्थिक मंदी और महंगाई जैसी समस्याएं कई देशों को प्रभावित कर सकती हैं। तकनीकी क्षेत्र में तेजी से हो रहे बदलाव भी सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं को प्रभावित करेंगे।

2083 का संदेश

इस नव संवत्सर का एक महत्वपूर्ण संदेश यह भी है कि व्यक्ति को अपने कर्मों के प्रति सजग रहना होगा। शनि के प्रभाव के कारण कर्मफल का सिद्धांत और अधिक स्पष्ट रूप से सामने आएगा। जो लोग परिश्रम, ईमानदारी और धैर्य के साथ कार्य करेंगे, उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी, जबकि लापरवाही और अनैतिकता के परिणाम भी तुरंत देखने को मिल सकते हैं।

अंततः, नव संवत्सर 2083 केवल भविष्यवाणियों का विषय नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और संकल्प का अवसर भी है। यह समय है जब हम अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करें। प्रकृति के साथ सामंजस्य, समाज के प्रति उत्तरदायित्व और अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठा-यही इस वर्ष की सफलता की कुंजी होगी।

नव संवत्सर हमें यह संदेश देता है कि हर अंत एक नई शुरुआत का संकेत है। चुनौतियों के बीच अवसर छिपे होते हैं और संघर्ष ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है। यदि हम इस वर्ष को सकारात्मक दृष्टिकोण और दृढ़ संकल्प के साथ अपनाएं, तो यह संवत्सर हमारे लिए नई ऊंचाइयों और उपलब्धियों का द्वार खोल सकता है।

सत्य की यात्रा

डॉ विजय गर्ग

मानव जीवन की सबसे महान खोजों में यदि किसी एक को सर्वोच्च स्थान दिया जाए, तो वह है—सत्य की खोज। सत्य केवल एक शब्द नहीं, बल्कि जीवन जीने की दिशा, विचारों की शुद्धता और आत्मा की शांति का आधार है। यह यात्रा बाहरी दुनिया से अधिक भीतर की ओर होती है, जहाँ मनुष्य स्वयं से सामना करता है।

सत्य की यात्रा का आरंभ जिज्ञासा से होता है। जब मन में प्रश्न उठते हैं—"मैं कौन हूँ?", "जीवन का उद्देश्य क्या है?", "सही और गलत का मापदंड क्या है?"—तभी व्यक्ति इस मार्ग पर कदम रखता है। इतिहास में अनेक महान व्यक्तित्वों ने सत्य की खोज को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया। महात्मा गांधी ने अपने जीवन को "सत्य के प्रयोग" कहा और यह सिद्ध किया कि सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर भी बड़े परिवर्तन लाए जा सकते हैं।

सत्य की राह सरल नहीं होती। यह अक्सर संघर्षों, त्याग और कठिन निर्णयों से भरी होती है। कई बार व्यक्ति को सामाजिक दबाव, व्यक्तिगत स्वार्थ और भय का सामना करना पड़ता है। परंतु जो व्यक्ति सत्य के प्रति अडिग रहता है, वह अंततः आत्मिक संतोष और सम्मान प्राप्त करता है। सत्य की यही विशेषता है—यह देर से ही सही, परंतु विजयी अवश्य होता है।

सत्य की यात्रा में आत्मनिरीक्षण का विशेष महत्व है। जब हम अपने भीतर झांकते हैं, अपनी गलतियों को स्वीकार करते हैं और उन्हें सुधारने का प्रयास करते हैं, तभी हम सच्चे अर्थों में सत्य के करीब पहुँचते हैं। यह प्रक्रिया हमें विनम्र बनाती है और हमारे व्यक्तित्व को निखारती है।

आज के समय में, जब सूचना का अंबार है और भ्रम की स्थिति बनी रहती है, सत्य की पहचान करना और भी चुनौतीपूर्ण हो गया है। ऐसे में विवेक, तर्क और नैतिक मूल्यों का सहारा लेना आवश्यक है। हमें यह समझना होगा कि हर चमकती हुई चीज़ सत्य नहीं होती, और हर कठिन मार्ग गलत नहीं होता।

अंततः, सत्य की यात्रा एक अंतहीन प्रक्रिया है। यह कोई गंतव्य नहीं, बल्कि एक निरंतर चलने वाला मार्ग है। इस यात्रा में हर कदम हमें बेहतर इंसान बनने की ओर ले जाता है। जब हम सत्य को अपनाते हैं, तो न केवल हमारा जीवन उज्जवल होता है, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन आता है।

आस्था, शक्ति और समाज का धर्म सेतु हैं नवरात्र

डॉ घनश्याम बादल

भारतीय संस्कृति पर्व, उपवास व्रत और संकल्पों की ऐसी मंजूषा है जिसकी तुलना विश्व में संभव ही नहीं है। हमारी संस्कृति में पर्व केवल उत्सव नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन के प्रतीक होते हैं। नवरात्र ऐसा ही एक पर्व है, जो शक्ति, साधना और स्त्री-सम्मान का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। वर्ष में मुख्यतः दो बार—चैत्र और आश्विन मास में मनाए जाने वाले नवरात्र, नौ दिनों तक देवी शक्ति की उपासना का पर्व हैं। यह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, सामाजिक चेतना और आध्यात्मिक उन्नयन का अवसर भी है।

नवरात्र का मूल आधार शक्ति की उपासना है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जब असुरों के अत्याचार बढ़ गए और देवता असहाय हो गए, तब सभी देवताओं की शक्तियों से एक दिव्य शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ—मां दुर्गा। उन्होंने नौ दिनों तक महिषासुर से युद्ध कर दशमी के दिन उसका वध किया। यह घटना बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक बनी। एक अन्य महत्वपूर्ण संदर्भ रामायण से जुड़ा है, जहां भगवान राम ने लंका विजय से पूर्व देवी दुर्गा की आराधना की थी, जिसे "अकाल बोधन" कहा जाता है। इस प्रकार नवरात्र केवल देवी-पूजन ही नहीं, बल्कि संकल्प, धैर्य और विजय की प्रेरणा भी देता है।

धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से नवरात्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन नौ दिनों को तीन प्रमुख शक्तियों—महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती—की उपासना के रूप में देखा जाता है। महाकाली अज्ञान और भय का नाश करती हैं, महालक्ष्मी समृद्धि और संतुलन प्रदान करती हैं, जबकि महासरस्वती ज्ञान और विवेक की प्रतीक हैं। उपवास, ध्यान और जप के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर सकारात्मकता को जागृत करता है। यह आत्मसंयम, अनुशासन और आत्मनिरीक्षण का भी काल है, जो मनुष्य को भीतर से सशक्त बनाता है।

नवरात्र में कन्या पूजन की परंपरा विशेष महत्व रखती है। छोटी बालिकाओं को देवी का स्वरूप मानकर उनका पूजन करना, उन्हें भोजन कराना और उपहार देना इस बात का प्रतीक है कि नारी सृजन और शक्ति का मूल स्रोत है। यह परंपरा समाज को यह संदेश देती है कि बालिकाओं के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता केवल धार्मिक कर्मकांड न होकर, जीवन का स्थायी मूल्य होना चाहिए।

वास्तव में नवरात्र का मूल भाव ही नारी शक्ति की स्थापना है। देवी दुर्गा, काली और सरस्वती के विविध रूप यह दर्शाते हैं कि नारी केवल कोमलता की प्रतीक नहीं, बल्कि शक्ति, ज्ञान और नेतृत्व का भी केंद्र है। यह पर्व समाज को यह प्रेरणा देता है कि महिलाओं को समान अधिकार, अवसर और सम्मान दिया जाए। यदि इस संदेश को व्यवहार में उतारा जाए, तो नवरात्र नारी सशक्तिकरण का एक सशक्त सांस्कृतिक अभियान बन सकता है।

आधुनिक युग में आवश्यक है कि हम नवरात्र को समयानुकूल परिमार्जित करें। भव्यता और दिखावे की बजाय सादगी और आंतरिक श्रद्धा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए सजावट और पूजन सामग्री में प्राकृतिक और पर्यावरण अनुकूल साधनों का उपयोग करना चाहिए। ध्वनि और प्रदूषण पर नियंत्रण रखते हुए उत्सव को संतुलित और जिम्मेदार बनाया जाना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कन्या पूजन को केवल एक दिन का अनुष्ठान न मानकर, वर्ष भर बालिकाओं और महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा और शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता का रूप दिया जाए। सामाजिक सेवा के रूप में गरीब बालिकाओं की शिक्षा में सहयोग, महिला स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और जरूरतमंदों की सहायता जैसे कार्य इस पर्व को और अधिक सार्थक बना सकते हैं।

आज के डिजिटल युग में यह भी आवश्यक है कि नवरात्र को केवल सोशल मीडिया प्रदर्शन तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसके मूल संदेश को समझकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का माध्यम बनाया जाए। जब हम नवरात्र के वास्तविक अर्थ—सत्य, साहस, संयम और सम्मान—को अपने जीवन में उतारते हैं, तभी यह पर्व अपने पूर्ण स्वरूप में हमारे सामने आता है।

निष्कर्षतः, नवरात्र केवल देवी की आराधना का पर्व नहीं, बल्कि आत्मबल, सामाजिक समरसता और नारी सम्मान का उत्सव है। यह हमें सिखाता है कि वास्तविक शक्ति हमारे भीतर निहित है और उसे जागृत करने की आवश्यकता है। यदि हम इस पर्व के संदेश को आत्मसात कर लें, तो यह न केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन को समृद्ध करेगा, बल्कि समाज को भी एक नई दिशा प्रदान करेगा।(युवराज फीचर्स)

प्रोफेसर केपी सिंह पर आधारित तीन पुस्तकों का लोकार्पण

प्रो केपी सिंह जहां रहते हैं ; वह स्थान वैभव पूर्ण हो जाता है :-प्रो बीपी मंगला

-नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के विभागाध्यक्ष; दिल्ली विश्वविद्यालय गांधी भवन के निदेशक प्रो.के.पी. सिंह के 25 वर्ष (2001-2026) के शैक्षणिक यात्रा को समर्पित तीन पुस्तकों का लोकार्पण समारोह गांधी भवन परिसर में संपन्न हुआ।इस कार्यक्रम का आयोजन दिल्ली पुस्तकालय संघ द्वारा किया गया। कार्यक्रम का आरंभ दिल्ली विश्वविद्यालय कुल गीत से हुआ।समारोह के मुख्य अतिथियों का परिचय डॉ.मनीष कुमार ने दिया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आद्या जागिनी मठ सूरत के पीठाधीश जगद्गुरु धर्माचार्य श्री 108 सूर्यनारायण दास जी महाराज जी;कार्यक्रम के अध्यक्ष डीन कॉलेजेज प्रो.बलराम पाणी जी;अन्य अतिथि प्रो.बी.पी मंगला;प्रो.इंद्र मोहन कपाही;प्रो.प्रेम सिंह; प्रो.राकेश कुमार भट्ट का अभिनंदन अंगवस्त्र,पुष्प- गुच्छ,स्मृति चिन्ह देकर किया गया।कार्यक्रम के केंद्र बिंदु प्रो.के पी सिंह का स्वागत दिल्ली पुस्तकालय संघ के सभी पदाधिकारियों डॉ ज्ञानेंद्र नारायण सिंह,प्रो.मीरा आदि ने किया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन प्रो.प्रेरणा मल्होत्रा ने किया।

प्रो.प्रेम सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि प्रो.बीपी मंगला,डॉ.रंगनाथन के बाद प्रो.केपी सिंह पुस्तकालय सूचना विभाग के भीष्म पितामह हैं।उन्होंने प्रो.केपी सिंह के विश्वविद्यालय सेवा के 25 वर्षों की यात्रा के लिए बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित की। प्रो.केपी सिंह के अकादमिक जीवन-यात्रा पर आधारित पुस्तक,'₹Silver Linings Shaping Minds and Institution₹ पर चर्चा करते हुए प्रो. प्रेम सिंह ने बताया कि इस पुस्तक में प्रो.सिंह की अकादमिक यात्रा के अलग अलग पड़ावों और उपलब्धियों के विषय में संपादकों एवं लेखकों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

प्रो.बी.पी.मंगला ने सभी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि गुरुओं का भी कभी कभी भाग्य होता है जब प्रो.केपी सिंह जैसे शिष्य उनके हिस्से में आते हैं।उन्होंने कहा है कि निस्वार्थ भाव से परिपूर्ण केपी सिंह जहां रहते है;वह स्थान वैभवपूर्ण हो जाता है। प्रो इंद्र मोहन कपाही ने कहा कि जब आप पुस्तकालय विज्ञान विभाग में घुसेंगे तो आपको लगेगा कि किसी अलग दुनिया में आ गए हैं। केपी सिंह ने यह करके दिखाया कि अपनी कर्मभूमि को और श्रेष्ठ कैसे बनाएं। अपनी तरफ से कुछ भी सहयोग करने में संकोच नहीं करेंगे।अलग-अलग स्थानों, समितियों,कार्यक्रमों से प्राप्त यात्रा व्यय धनराशि को अलग कोष में रखकर और अपनी ओर से राशि मिलाकर उसको दुगुना करना और फिर विभाग में लगा देना।यह कला इनसे सीखनी चाहिए। इनको जहां भी दायित्व मिला उस दायित्व को अपने बहुआयामी व्यक्तित्व से श्रेष्ठ बनाया हैं।

प्रो.बलराम पाणी ने संबोधित करते हुए कहा

पुस्तकें हमारी पहचान हैं और पुस्तकालय विज्ञान विभाग की अद्वितीय पहचान के पी सिंह जी से हैं।अपनी सृजन कला द्वारा निरंतर रचना कर्म करते रहते हैं;यह इनके अद्वितीय व्यक्तित्व की पहचान है।प्रत्येक कार्य सर्वश्रेष्ठ रूप में हो।गुणवत्ता को वरीयता देना इनकी सबसे विशिष्ट पहचान है।केपी सिंह आपको हमेशा मुस्कराते हुए मिलेंगे।स्व-प्रेरणा से अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए कर्त्तव्यपरायणता के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

प्रो.केपी सिंह पर केंद्रित दूसरी पुस्तक ,₹A Leader's Ascent: Professor KP Singh Journey in the Spotlight₹ पर अपने विचार रखते हुए पुस्तकालय विज्ञान विभाग के वरिष्ठ प्रो.आर के भट्ट ने कहा कि हमारे बीच में प्रो.केपी सिंह जैसा ऐसा कर्मयोगी है जो यह संकल्प करके आया है कि विभाग को विश्व का श्रेष्ठ विभाग बनाना है।उन्होंने बताया कि इस पुस्तक में प्रो. के पी सिंह के शोध पत्रों की समीक्षाओं सहित,उनकी अकादमिक यात्रा के पड़ाव सम्मिलित हैं।

समारोह में प्रो.के पी सिंह पर आधारित तीन पुस्तकों

1.₹Silver Linings:Shaping Minds and Institution ₹.

2.₹A Leader's Ascent: Professor KP Singh's Journey in the Spotlight.₹

3.₹प्रोफेसर के पी सिंह मीडिया के आईने में₹ का विमोचन किया गया।इसके बाद पूर्व विद्यार्थियों द्वारा प्रो.केपी सिंह का भव्य स्वागत किया गया।मुख्य अतिथि जगद्गुरु धर्माचार्य श्री 108 सूर्य नारायणदास ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि प्रो.केपी सिंह कर्मयोगी ऋषि हैं।ऋषि इसलिए कि वो निश्छल निर्मल और उत्कृष्ट विराट हृदय से कार्य करते हैं। ऋषि मंत्रदृष्टा होते हैं और एक पुस्तकालय विज्ञान का प्रोफेसर भी ऐसा ही मंत्रदृष्टा होता है।इन्होंने कर्म को कार्य के रूप में परिलक्षित किया है।पुस्तकालय विज्ञान विभाग अपनी उत्कृष्टता के लिए सदैव जाना जाएगा।प्रो.केपी सिंह सूर्य हैं और उनके शिष्य उसकी किरणें हैं।ये चंद्रमा हैं और उनकी शीतलता उनके शिष्य हैं।उन्होंने प्रो.केपी सिंह जी को 25 वर्ष की अकादमिक यात्रा के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की।

अंत में दिल्ली पुस्तकालय संघ के महासचिव डॉ ज्ञानेंद्र नारायण सिंह ने सभी का धन्यवाद और प्रो केपी सिंह ने आभार प्रकट किया।कार्यक्रम में प्रो.धनंजय जोशी,प्रो.निरंजन कुमार,प्रो. दर्शन पाण्डेय,प्रो.मनोज कुमार कैन,प्रो मोहन,प्रो केपी चिंदा,प्रो संजीव तिवारी,प्रो एच एस प्रसाद, डॉ चेतन सिंह,श्री ऋषि शर्मा,डॉ गरिमा गौड़,डॉ प्रवीण बब्बर, डॉ महेश चंद्र,डॉ गरिमा शर्मा,प्रो.हंसराज सुमन,डॉ बेबी,डॉ हंसराज,डॉ कर्णिका गौड़,अधिवक्ता अश्विनी यादव, डॉपिंकी शर्मा,डॉ किम्मी,प्रो एमपी सिंह,डॉ नरेंद्र रावत, डॉ विनय गुप्ता, डॉ संजीव शर्मा,डॉ अशोक कुमार,डॉ रितु वर्मा,डॉ दीप्ति सिंह,डॉ सुरेखा कॉल,डॉ पूजा जैन,डॉ प्रमोद शर्मा,डॉ बबीता गौड़ ,डॉ अनवर जहान, आचार्य विश्वमोहन, कार्यालय प्रभारी संजीव चौहान, एमटीएस बलबीर और अशोक,सहित अन्य प्राध्यापक,प्राचार्य,शोधार्थी एवं छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

झारखंड के भैरवी नदी तट और छिन्नमस्तिका मंदिर पर हाईकोर्ट सख्त

अवमानना याचिका पर पर्यटन सचिव एवं रामगढ़ उपायुक्त सशरीर तलब

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , झारखंड हाईकोर्ट ने रजरप्पा स्थित मां छिन्नमस्तिका मंदिर और भैरवी नदी तट पर बुनियादी सुविधाओं की कमी को लेकर कड़ा रुख अपनाया है. अवमानना याचिका पर सुनवाई करते हुए जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद और जस्टिस संजय प्रसाद की खंडपीठ ने पूर्व में दिये गये आदेश का पालन नहीं होने पर नाराजगी जताई.

झारखंड हाईकोर्ट ने सुनवाई के दौरान पाया कि 11 अगस्त 2023 को दिये गये निर्देशों के बावजूद करीब ढाई साल बीत जाने के बाद भी स्थिति में सुधार नहीं हुआ है. इसे गंभीर मानते हुए कोर्ट ने पर्यटन विभाग के सचिव और रामगढ़ के उपायुक्त को अगली सुनवाई में सशरीर उपस्थित होने का निर्देश दिया है. मामले की अगली सुनवाई 18 मार्च को सुबह 11:30 बजे होगी.

पूर्व में दायर जनहित याचिका में झारखंड हाईकोर्ट ने भैरवी नदी के दोनों किनारों पर स्नान घाट, शौचालय, चेंजिंग रूम और बाथरूम जैसी सुविधाएं विकसित करने का आदेश दिया था. साथ ही घाटों तक जाने वाले रास्तों को अतिक्रमण मुक्त रखने, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था करने और साफ-सफाई सुनिश्चित करने को कहा गया था

अदालत ने श्रद्धालुओं के लिए पेयजल, प्रतीक्षालय, शौचालय, प्राथमिक चिकित्सा सुविधा और त्योहारों के दौरान मोबाइल मेडिकल यूनिट उपलब्ध कराने के भी निर्देश दिये थे. इसके अलावा नदी तट चौड़ा करने और अतिक्रमण हटाने की बात कही गयी थी. याचिकाकर्ता संजीव कुमार सिंह ने अवमानना याचिका दायर कर इन आदेशों के अनुपालन की मांग की है.

नकली शराब निर्माण हेतु 24 हजार लीटर कच्चा सप्रिट से भरा टैंकर धनबाद में जब्त

झारखंड के हर जिले में अवैध शराब निर्माण की है अपनी कहानी है

के ०के० परिच्छा , स्टेट हेड - झारखंड

रांची कौन कहता है झारखंड जिलों में अवैध शराब निर्माण नहीं होता । अगर ऐसा नहीं होता तो

धनबाद में उत्पाद विभाग ने बड़ी कार्रवाई हेतु विवश नहीं होता नाही भारी मात्रा में अवैध कच्चा सप्रिट जब्त हो पाता । भला हो सहायक उत्पाद आयुक्त का जिनके निर्देश व गुप्त सूचना के आधार पर की गई इस कार्रवाई में करीब 24 हजार लीटर कच्चा सप्रिट से भरे एक टैंकर को पकड़ा गया है।

उत्पाद विभाग की टीम ने तोपचांची थाना क्षेत्र के कोटाल अड्डा स्थित नेशनल हाईवे पर जीओ पेट्रोल पंप के पास छापेमारी की। इस दौरान नागालैंड नंबर NL-01-L-1775 टैंकर को रोककर जांच की गई, जिसमें भारी मात्रा में कच्चा सप्रिट बरामद हुआ।

जांच के दौरान टैंकर चालक से पूछताछ की गई, जिसमें उसने खुलासा किया कि इस सप्रिट को गिरिडीह और हजारीबाग के नकली शराब कारोबारियों के पास सप्लाई किया जाना था। यह खुलासा होते ही विभाग ने तुरंत टैंकर को जब्त कर लिया।

उत्पाद विभाग ने आरोपी चालक को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। फिलहाल पूरे मामले की गहन जांच जारी है और इस अवैध कारोबार से जुड़े अन्य लोगों की तलाश की जा रही है।

झारखंड के 23 आईएएस पश्चिमी बंगाल चुनाव में आब्जर्वर नियुक्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के लिए झारखंड कैडर के 23 आईएएस अधिकारियों को अलग-अलग जिलों में ऑब्जर्वर नियुक्त किया गया है। तमिलनाडु, केरल और असम राज्य के लिए भी कुछ आईएएस अधिकारियों की तैनाती की गई है। अधिकतर अधिकारियों ने संबंधित राज्यों में रिपोर्ट कर दी है। ये अधिकारी चुनावी प्रक्रिया की निगरानी, मतदाता सुरक्षा और निष्पक्ष मतदान सुनिश्चित करने का कार्य करेंगे। बता दें कि पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए झारखंड कैडर के आईएएस अधिकारियों की बीते 5 फरवरी को नई दिल्ली में बैठक हुई थी। बैठक के लिए मुख्य निर्वाचन अधिकारी सह सचिव के. रवि ने कार्मिक विभाग को पत्र लिखा था। कार्मिक के आदेश के बाद बैठक में शामिल होने के लिए आईएएस अधिकारी नई दिल्ली गए थे।पश्चिम बंगाल के लिए निम्न अधिकारियों को मिला है जिम्मा। श्रीनिवासन बीरभूम नानूर (एससी),जाधव विजया नारायणराव बीरभूम, हसनवाघमारे प्रसाद कृष्णा दक्षिण दिनाजपुर ,हरिरामपुरमनोज कुमार मालदा, मानिकचकजीशान कमर मालदा सुजापुर,अंजनेयुलु डोड्डे मुर्शिदाबाद भरतपुर,संदीप सिंह मुर्शिदाबाद दोमकल,चंद्रशेखर पश्चिम वर्दवान रानीगंज,माधवी मिश्रा पश्चिम मेदिनीपुर पिंगल,आदित्य आनंद पूर्व मेदिनीपुर,जितेंद्र कुमार सिंह पुरुलिया बाघमुंडी,मनीष रंजन पुरुलिया पुरुलिया,कृपानंद झा उत्तर दिनाजपुर करनदिघी,वरुण रंजन हुगली बालागढ़ (एससी),राजेश शर्मा हुगली सप्ताग्राम,घोलप रमेश गोरख हावड़ा हावड़ा उत्तर,,सूरज कुमार हावड़ा उलूबेरिया उत्तर (एससी),अमित कुमार हावड़ा दोम्जुरी,मुकेश कुमार नॉर्थ 24 परगना बनगांव उत्तर (एससी),शशि रंजन नॉर्थ 24 परगना खड़दहा,मृत्युंजय बरनवाल नॉर्थ 24 परगना बारानगर,शशि रंजन साउथ 24 परगना कुलतली (एससी),भोर सिंह यादव बांकुरा रानीबंध (एसटी)अन्य आईएएस को भी मिला है जिम्मेदारी ।इसके अलावा कुलदीप चौधरी को केरल, किरण पासी को असम और संजीव कुमार बेसरा व नैन्सी सहाय को तमिलनाडु राज्य में विधानसभा चुनाव की तैयारियों का जिम्मा दिया गया है।

एक शाम श्री मायली माताजी के नाम विशाल भव्य जागरण 25 मार्च को

एक शाम श्री मायली माताजी वेरा अजीरावा जोजावर (पाली)पर एक विशाल भजन संन्ध्या एवं महाप्रसादी का आयोजन शाम 6 बजे से चैत्र सुदी सातम को और चैत्र सुदी आठम यानी होम अस्टमी को सुबह 6 बजे से मायली माताजी स्थान.वेरा अजिरावा पर हवन यज्ञ जोजावर जिला पाली राजस्थान पर श्री मायली माताजी उपासक दाता श्री रतनरिहजी के सानीध्य में होगा

एक बजे माताजी की महाआरती होगी महाप्रसादी के लाभार्थी परिवार द्वारा माताजी को भोग चढाया जायेगा और स्थान पर आने वाले सभी श्रध्दालुओं के लिए महाप्रसादी का आयोजन होगा जिसमे 36 कुम के लोग भाग लेते हैं और. हजारो लोग माताजी के दर्शन के लिए अनेक राज्यों से परीवार सहीत आते हैं और माताजी के यहाँ अर्जी लगाते हैं जिनकी माताजी के आर्शीवाद से मनोकामना पूरी होती है।

यहां की एक विशेष बात यह है कि इस स्थान पर एक रुपया भी नहीं चढ़ाया जाता है आपकी इच्छा के अनुसार आपके हाथ से नारीयल और फुल माला चढा सकते है। इस स्थान पर मन्दिर के बाजू एक बढ़ा बोर्ड लगाया गया है जिसमें स्पष्ट रुपसे लिखा गया है इस स्थान पर एक रुपया भी किसी ने चढाया तो उसे भगा दिया जायेगा। हर वर्ष भी भाँती अनेक भामाशाह मिलकर अपनी इच्छा अनुसार इस स्थान पर आयोजन को सफल बनाने के पूरा सहयोग करते हैं और आने वाले वर्ष के लिए इस वर्ष भामाशाह का नाम अगले वर्ष कौन किया करेगा उसकी पूरी रूप रेखा बनाई जाती है। (हंसाराम आगलेचा मरुधर कोलपुरा वर्तमान में हैदराबाद तेलंगाना)ने दी

डॉ. उपासना दीक्षित राष्ट्र शक्ति शिरोमणि सम्मान 2026 से अलंकृत

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली, 18 मार्च। भारत के प्रखर राष्ट्रवादी साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन सम्पर्क क्रांति परिवार के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय शक्ति शिखर सम्मेलन में डॉ. उपासना दीक्षित को "राष्ट्र शक्ति शिरोमणि सम्मान 2026" से सम्मानित किया गया।

समारोह में असम के पूर्व राज्यपाल तथा दिल्ली सरकार के पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री जगदीश मुखी, संपर्क क्रांति परिवार के संस्थापक शिव विनायक शर्मा तथा योगेश कुमार पटेल ने डॉ. उपासना दीक्षित को समाज एवं राष्ट्र के प्रति सकारात्मक योगदान और प्रेरणादायक कार्यों के माध्यम से नारी शक्ति के सशक्त उदाहरण के रूप में यह सम्मान प्रदान किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम में पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, भारत की पूर्व उच्चायुक्त पद्मजा, कस्टम एवं जीएसटी दिल्ली के अपर आयुक्त, मेजर जनरल गोपाल कृष्ण थपरियाल, कमलिनी अस्थाना, नलिनी अस्थाना, मरु कोकिला लोक गायिका सीमा मिश्रा तथा भोजपुरी गायिका नीतू सिंह सहित विभिन्न क्षेत्रों की कई विशिष्ट विभूतियां उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम में संपर्क क्रांति परिवार के ज्यूरी सदस्यों ने देश के विभिन्न राज्यों से आई उन महिलाओं को सम्मानित किया, जिन्होंने गायन, नृत्य, समाज सेवा, साहित्य, शिक्षा, फिल्म, मीडिया, उद्योग, राजनीति, न्यायपालिका और खेल सहित अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा और परिश्रम से उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं।

संपर्क क्रांति परिवार के संस्थापक शिव विनायक शर्मा एवं निर्णायक मंडल के सदस्यों सहित आयोजन से जुड़े सभी प्रतिनिधियों के सहयोग से कार्यक्रम भव्यता और गरिमा के साथ संपन्न हुआ।

श्री कृष्णा गौ सेवा आश्रम होसुर बंडे की गौशाला में मंगलवार सुबह एक बड़ी आगजनी की घटना ने पूरे क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया...

बेंगलूरु। श्री कृष्णा गौ सेवा आश्रम होसुर बंडे की गौशाला में मंगलवार सुबह एक बड़ी आगजनी की घटना ने पूरे क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया। सुबह करीब 11:30 बजे गौशाला के चारा गोदाम में अचानक आग लग गई, जिसने देखते ही देखते विकराल रूप धारण कर लिया। आग मुख्य रूप से सूखी घास और शेड के हिस्से में फैल गई, जिससे गोमाताओं के लिए रखा गया भारी मात्रा में चारा जलकर राख हो गया। गौरतलब है कि इस गौशाला में हजारों गोमाताओं का पालन-पोषण किया जाता है और इसका संचालन गौसेवक पुखराज जी महाराज के नेतृत्व में किया जा रहा है, जो लंबे समय से निस्वार्थ भाव से गौ सेवा में लगे हुए हैं। घटना की सूचना मिलते ही सैकड़ों की संख्या में गौभक्त मौके पर पहुंच गए और बिना किसी संसाधन के भी आग बुझाने में जुट गए। वहीं फायर ब्रिगेड की तीन दमकल गाड़ियां मौके पर पहुंची और कड़ी मशक्कत के बाद करीब 24 घंटे में आग पर काबू पाया जा सका। इस दौरान स्थानीय पुलिस मौके पर मौजूद नहीं रही। हालांकि, जहां एक ओर गौभक्तों और फायर ब्रिगेड की तत्परता सराहनीय रही, वहीं प्रशासनिक अमले की कार्यशैली सवालों के घेरे में नजर आई। बताया जा रहा है कि आग सुबह 11:30 बजे लगी, लेकिन स्थानीय विधायक और अन्य प्रशासनिक अधिकारी शाम करीब 6:30 बजे घटनास्थल पर पहुंचे।

स्वामी पुखराज महाराज ने बताया कि आग की इस भयावह घटना में लगभग डेढ़ करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। दोनों शेड में रखा लाखों रुपये का चारा पूरी तरह जलकर खाक हो गया, साथ ही शेड भी पूरी तरह नष्ट हो गए।

इस घटना से गौशाला को भारी आर्थिक क्षति हुई है और गोभक्तों में गहरा दुःख एवं आक्रोश देखा जा रहा है।

स्वामी पुखराज महाराज एवं उनके साथ सैकड़ों गोभक्तों ने गौशाला में हुई घटना के विरोध में चार

किलोमीटर पैदल मार्च करते हुए बागलुर पुलिस स्टेशन पहुंचकर एफआईआर दर्ज करवाई।

स्थानीय लोगों ओर गौभक्तों में इस बात को लेकर भी आक्रोश देखा गया कि यदि समय रहते प्रशासन सक्रिय हो जाता, तो नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता था। लोगों ने प्रशासन की धीमी प्रतिक्रिया को लेकर नाराजगी जताई और भविष्य में ऐसी लापरवाही नहीं दोहराने की मांग की। प्राथमिक जांच में आग लगने का कारण सूखी घास बताया जा रहा है, हालांकि पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और वास्तविक कारण जांच के बाद ही सामने आएगा। कुछ लोगों ने इस घटना को संदिग्ध बताते हुए सख्त कार्रवाई की मांग भी की है, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। इस दुखद घटना में भले ही किसी गोमाता के हताहत होने की खबर नहीं है, लेकिन उनके लिए रखा गया चारा पूरी तरह जलकर खाक हो गया, जिससे आने वाले दिनों में गौशाला के सामने बड़ा संकट खड़ा हो सकता है। गौशाला प्रबंधन ने सभी गौभक्तों, स्वयंसेवकों और फायर ब्रिगेड का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने संकट की इस घड़ी में आगे बढ़कर सहयोग किया। साथ ही प्रशासन से मांग की गई है कि आगजनी की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

"फ्रीज़ या देरी? सुप्रीम कोर्ट का स्थगन आदेश और साइबर अपराध प्रवर्तन पर बहस"

पिंकी कुंडू

साइबर अपराध जांच में सबसे बड़ी चुनौती:

संदिग्ध खातों को तुरंत फ्रीज़ करने की वर्तमान कानूनी स्थिति क्या है?

सुप्रीम कोर्ट का स्थगन आदेश

– मामला: कार्तिक योगेश्वर चतुर बनाम भारत संघ (क्रिमिनल डब्ल्यू.पी. नं. 321/2025) – स्थगित।

– बॉम्बे हाई कोर्ट ने कहा था कि NCRP पर दर्ज साइबर धोखाधड़ी मामलों में बैंक खातों को फ्रीज़ करना धारा 107 BNSS, 2023 के अंतर्गत होना चाहिए, जिसमें न्यायालय का आदेश आवश्यक है, न कि धारा 106 BNSS के अंतर्गत, जो प्रशासनिक कार्रवाई की अनुमति देता है।

– भारत संघ ने इस व्याख्या को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी, यह कहते हुए कि न्यायिक अनुमति की अनिवार्यता से संदिग्ध खातों को तुरंत फ्रीज़ करने में देरी होगी और धोखाधड़ी से प्राप्त धनराशि निकालने या गायब करने का अवसर मिल जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट की कार्यवाही (13 मार्च 2026)

SPECIAL LEAVE PETITION (CRIMINAL) Diary No(s). 72660/2025

– पीठ: न्यायमूर्ति प्रशांत कुमार मिश्रा और न्यायमूर्ति एन.वी. अंजारिया।

– कोर्ट ने नोट किया कि बॉम्बे हाई कोर्ट ने हेडस्टार ग्लोबल प्रा. लि. बनाम राज्य केरल (क्रिमिनल एमसी नं. 3740/2025) के फैसले पर भरोसा करते हुए खाते फ्रीज़ करने के आदेश रद्द किए।

– अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (ASG) ने सुओ मोटू रिट याचिका (क्रिमिनल) नं. 3/2025 का हवाला दिया, जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने विभिन्न हाई कोर्ट के विरोधाभासी दृष्टिकोणों को स्वीकार किया था।

सुओ मोटू रिट याचिका (क्रिमिनल) नं. 3/2025 से प्रमुख टिप्पणियाँ

– पैरा 12: सुप्रीम कोर्ट ने केरल हाई कोर्ट (रश्मि के.आर. बनाम एनसीसीआरपी) और बॉम्बे हाई कोर्ट (कार्तिक योगेश्वर चतुर्वेदी बनाम भारत संघ) के विरोधाभासी निर्णयों पर ध्यान दिया।

– पैरा 13: कोर्ट ने निर्देश दिया कि सीबीआई और राज्य पुलिस प्राधिकरण, एफआईआर हो या न हो, उन खातों को फ्रीज़ कर सकते हैं जिनमें धनराशि डिजिटल गिरफ्तारी घोटालों या साइबर अपराधों से जुड़ी हुई है और जिन्हें NCRP/CBI को रिपोर्ट किया गया है।

सुप्रीम कोर्ट का आदेश (13 मार्च 2026)

1. विलंब क्षमा किया गया।
2. नोटिस जारी हुआ।
3. मामला सुओ मोटू रिट याचिका (क्रिमिनल) नं. 3/2025 के साथ टैग किया गया।
4. बॉम्बे हाई कोर्ट के आदेश का संचालन और प्रभाव स्थगित किया गया।

"इस बीच, विवादित आदेश का संचालन और प्रभाव स्थगित रहेगा।" (सुप्रीम कोर्ट आदेश, 13-03-2026)

प्रभाव

ड्ड तत्काल प्रभाव: बॉम्बे हाई कोर्ट का निर्णय, जिसमें धारा 107 BNSS के अंतर्गत न्यायिक अनुमति आवश्यक बताई गई थी, स्थगित कर दिया गया है। अब तक खाते धारा 106 BNSS के अंतर्गत प्रशासनिक रूप से फ्रीज़ किए जा सकते हैं।

– वृहत्तर महत्व:

o विभिन्न हाई कोर्ट के विरोधाभासी निर्णयों ने साइबर अपराध प्रवर्तन में अनिश्चितता पैदा की है।

o सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेप यह सुनिश्चित करता है कि धोखाधड़ी से प्राप्त धनराशि को तुरंत फ्रीज़ करने की शक्ति बनी रहे।

o अंतिम निर्णय यह स्पष्ट करेगा कि खाते फ्रीज़ करने के लिए न्यायिक अनुमति आवश्यक है (धारा 107) या प्रशासनिक कार्रवाई पर्याप्त है (धारा 106)।

– नीतिगत प्रभाव: यह मामला व्यक्तिगत अधिकारों (न्यायिक निगरानी) और राज्य की त्वरित कार्रवाई की आवश्यकता के बीच संतुलन को उजागर करता है।

कानूनी विवाद का सार

– बॉम्बे हाई कोर्ट: खाते फ्रीज़ करने के लिए धारा 107 लागू होगी – मजिस्ट्रेट का आदेश आवश्यक।

– भारत संघ: धारा 106 के तहत तत्काल कार्रवाई जरूरी; धारा 107 से देरी होने पर राशि निकालने का जोखिम।

– सुप्रीम कोर्ट (13 मार्च 2026): बॉम्बे HC के आदेश पर स्थगन दिया; फिलहाल खाते धारा 106 के तहत फ्रीज़ किए जा सकते हैं।

नीतिगत प्रभाव

– धारा 106 का लाभ: त्वरित कार्रवाई से साइबर धोखाधड़ी और डिजिटल गिरफ्तारी घोटालों में धनराशि सुरक्षित रहती है।

– मूल विवाद: गति बनाम न्यायिक निगरानी।

– सुप्रीम कोर्ट की अंतरिम स्थिति: अंतिम निर्णय तक धारा 106 लागू रहेगी।

राउरकेला स्टील प्लांट में कचरा ढुलाई के नाम पर करोड़ों की चोरी का आरोप, सी आई एस एफ की भूमिका पर सवाल

राउरकेला, 18 मार्च:

राउरकेला स्टील प्लांट में ब्लास्ट फर्नेस से निकलने वाले कचरे (स्लैग) के पहाड़ों की सफाई के नाम पर बड़े पैमाने पर मूल्यवान धातुओं की चोरी होने का मामला सामने आया है। आरोप है कि इस पूरे खेल में परिवहनकर्ता, ठेकेदारों के साथ-साथ सुरक्षा में तैनात सी आई एस एफ की भी संलिप्तता है।

जानकारी के अनुसार, पिछले करीब 7 वर्षों से प्लांट प्रशासन द्वारा टेंडर के माध्यम से ठेकेदारों को कचरा हटाने का काम दिया जा रहा है। इन कचरे के ढेरों में लोहा, प्लेटिनम और चांदी जैसे मूल्यवान धातु मौजूद रहते हैं। आरोप है कि इन्हीं कचरों के साथ चोरी-छिपे ये कीमती धातुएं ट्रकों के जरिए बाहर निकाली जा रही हैं और खुले बाजार में बेची जा रही हैं।

बताया जा रहा है कि इस अवैध कारोबार में शामिल परिवहनकर्ता अनैतिक तरीके से राउरकेला इस्पात संयत्र के कर्मचारियों व वरिय अधिकारीयों के शह एंव भागीदारी से भारी मुनाफा कमा रहे हैं, जबकि प्लांट की सुरक्षा में तैनात सी आई एस एफ पर आरोप है कि वह मोटी रकम लेकर इस पूरे मामले में चुप्पी साधे हुए है। इससे प्लांट को रोजाना करोड़ों में आर्थिक नुकसान हो रहा है।

यह भी चर्चा में है कि इस पूरे नेटवर्क को सुचारू रूप से चलाने के लिए नीचे से ऊपर तक लोगों को "मैनेज" किया जा रहा है। यहां तक कि यह आरोप भी सामने आ रहा है कि क्षेत्रीय विधायक को चुनाव जीतने के बाद एक महंगी गाड़ी और भुवनेश्वर में जमीन का टुकड़ा दिए जाने की बात क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई है।

राउरकेला स्टील प्लांट देश की एक महत्वपूर्ण संपत्ति है और इससे राज्य व देश को आर्थिक लाभ होना चाहिए, लेकिन इस तरह की कथित अनियमितताओं से भारी नुकसान होने की आशंका जताई जा रही है। सी आई एस एफ जिसका मुख्य काम सुरक्षा और चोरी रोकना है, उस पर ही मिलीभगत के आरोप लगना गंभीर चिंता का विषय है।

सूत्रों के अनुसार, कचरा हटाने का ठेका लेने वाले कुछ स्थानीय ठेकेदारों के साथ मिलकर यह पूरा खेल चल रहा है। प्लांट के अंदर विभिन्न स्थानों से कीमती धातुओं को चोरी कर कचरे के साथ मिलाया जाता है और फिर ट्रकों के जरिए बाहर भेज दिया जाता है।

इसके बाद इन धातुओं को अलग कर राज्य और राज्य के बाहर झारखण्ड,छत्तीसगढ़ व अन्य राज्यों में बेचा जा रहा है। आरोप यह भी है कि प्लांट में समय-समय पर लगने वाली आग में इन सामग्रियों के नष्ट होने का हवाला देकर वास्तविक नुकसान का हिसाब नहीं रखा जाता, जिससे यह पूरा मामला दबा रह जाता है।

इस मामले में उच्च स्तरीय जांच की मांग उठ रही है, ताकि सच्चाई सामने आ सके और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो सके।

नवरात्रि का फलाहार-आस्था के साथ स्वास्थ्य का उत्सव

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। नवरात्रि केवल पूजा-पाठ और साधना का पर्व नहीं, बल्कि यह शरीर और मन के शुद्धिकरण का भी श्रेष्ठ अवसर है। इस दौरान किया जाने वाला फलाहार (व्रत का आहार) यदि सही तरीके से लिया जाए, तो यह एक प्रकार का शरीर शुद्धिकरण कार्यक्रम बन सकता है।लेकिन प्रश्न यह है कि क्या नवरात्रि का फलाहार वास्तव में स्वास्थ्यवर्धक है? इस संबंध में विस्तृत चर्चा की प्रसिद्ध होमियोपैथिक चिकित्सक डाक्टर रुप कुमार बनर्जी ने। उन्होंने बताया कि नवरात्रि में सामान्य अनाज (गेहूं, चावल) त्यागकर फल, दूध, सूखे मेवे, साबूदाना, कुट्टू, सिंघाड़ा आदि का सेवन किया जाता है। यह आहार हल्का, सात्विक और पाचन में अपेक्षाकृत सरल होता है। फल, सब्जियाँ और हल्का भोजन शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने में मदद करते हैं।इससे लिवर और पाचन तंत्र को विश्राम मिलता है। यदि सही मात्रा और संतुलन रखा जाए, तो फलाहार कैलोरी कम करता है, जिससे वजन नियंत्रित रहता है।लेकिन ध्यान रहे कि अधिक तला हुआ "व्रत का खाना" वजन बढ़ा भी सकता है। फल (जैसे केला, सेब, पपीता) प्राकृतिक शर्करा से भरपूर होते हैं, जो शरीर को तुरंत ऊर्जा देते हैं।सूखे मेवे (बादाम, अखरोट) लंबे समय तक ऊर्जा बनाए रखते हैं।सात्विक भोजन मन को शांत करता है, जिससे ध्यान और साधना में वृद्धि होती है।

डाक्टर रुप कुमार बनर्जी ने बताया कि फलाहार नुकसानदायक भी हो सकता है? यदि तला-भुना "व्रत स्पेशल" भोजन जैसे साबूदाना की तली खिचड़ी, कुट्टू की पूड़ी, आलू चिप्स, मूंगफली फ्राई, सूखे मेवे को फ्राई आदि ये सब मिलकर व्रत को स्वास्थ्यप्रद से अस्वास्थ्यप्रद बना देते हैं। बहुत अधिक मिठाई, शक्कर वाली चाय, या ज्यादा फल (विशेषकर केला, आम) लेने से ब्लड शुगर बढ़ सकता है। कुछ लोग पूरे दिन कुछ नहीं खाते और शाम को बहुत भारी भोजन करते हैं।इससे एसिडिटी, गैस और कमजोरी हो सकती है। ऐसे लोगों को विशेष सावधानी चाहिए,जिन्हें मधुमेह , उच्च रक्तचाप है। इसके साथ गर्भवती महिलाएं, बुजुर्ग भी। इन्हें बिना अपने चिकित्सक की सलाह के कठोर व्रत नहीं रखना चाहिए।

फलाहार को स्वास्थ्यवर्धक बनाने के लिए ताजे फल और सलाद को प्राथमिकता दें, तली चीज़ों की जगह उबला या भुना भोजन लें, पर्याप्त पानी और नारियल पानी पिएं,कम मात्रा में लेकिन बार-बार खाएं,शक्कर की जगह शहद या प्राकृतिक मिठास लें। नवरात्रि का फलाहार स्वास्थ्य के लिए वरदान भी बन सकता है और नुकसान का कारण भी ,यह पूरी तरह इस बात पर निर्भर करता है कि हम क्या और कैसे खा रहे हैं।यदि संयम, संतुलन और सादगी रखी जाए, तो यह व्रत शरीर का शुद्धिकरण, मन की शांति और स्वास्थ्य का संवर्धन, तीनों एक साथ देता है।

ट्रैफिक नियमों के पालन की अपील

गोरखपुर। सड़क सुरक्षा को मजबूत बनाने के उद्देश्य से शहर में जागरूकता अभियान को तेज किया गया है। इसी क्रम में गैलेंट ग्रुप की ओर से शास्त्री चौराहे पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित कर ट्रैफिक पुलिसकर्मियों और आम नागरिकों के बीच 500 से अधिक हेलमेट वितरित किए गए। कार्यक्रम में एडीएम सिटी अंजनी कुमार सिंह और एसपी ट्रैफिक राजकुमार पांडेय मुख्य रूप से मौजूद रहे।

शहर के व्यस्ततम चौराहों में शामिल शास्त्री चौराहे पर आयोजित इस अभियान का उद्देश्य सड़क पर सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करना रहा। इस दौरान अधिकारियों ने बताया कि ट्रैफिक पुलिसकर्मी रोजाना तेज रफ्तार और भारी वाहनों के बीच घंटों ड्यूटी करते हैं, जिससे उनके सामने दुर्घटना का खतरा बना रहता है। ऐसे में उन्हें हेलमेट उपलब्ध कराना

उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

एसपी ट्रैफिक राजकुमार पांडेय ने कहा कि सड़क सुरक्षा केवल आम नागरिकों तक सीमित नहीं है, बल्कि ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों के लिए भी उतनी ही आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हेलमेट पहनना जीवन बचाने का सबसे सरल और प्रभावी उपाय है। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि ट्रैफिक नियमों की अनदेखी करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी। एडीएम सिटी अंजनी कुमार सिंह ने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं में गंभीर चोट का सबसे बड़ा कारण सिर पर लगने वाली चोट होती है, जिसे हेलमेट पहनकर काफी हद तक टाला जा सकता है। उन्होंने दोपहिया वाहन चालकों और सवारों से अपील की कि वे हेलमेट को अपनी आदत बनाएं और सुरक्षा नियमों का पालन करें।

बुद्धा पार्क के सौंदर्यकरण में गुणवत्ता सुधार के स्पष्ट निर्देश, प्रशासन हरकत में

भारतीय जाटव समाज की आपत्तियों पर कार्रवाई, उपेन्द्र सिंह के साथ अधिकारियों ने किया स्थलीय निरीक्षण

आगरा, संजय साग़र सिंह। कालिंदी विहार रोड स्थित निर्माणाधीन बुद्धा पार्क के सौंदर्यकरण कार्य को लेकर उठे सवालों पर प्रशासन ने गंभीरता दिखाते हुए सुधार की प्रक्रिया शुरू कर दी है। भारतीय जाटव समाज द्वारा दिए गए ज्ञापन के बाद अधिकारियों ने न केवल संज्ञान लिया, बल्कि गुणवत्ता सुधार के स्पष्ट निर्देश भी जारी कर दिए हैं। भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं वरिष्ठ भाजपा नेता उपेन्द्र सिंह के नेतृत्व में 11 मार्च 2026 को मंडलायुक्त को सौंपे गए ज्ञापन में बुद्धा पार्क निर्माण में उपयोग हो रहे पत्थरों (मार्बल स्टोन) की गुणवत्ता और तथागत बुद्ध एवं उनके अनुयायियों की प्रतिमाओं के स्वरूप पर आपत्ति जताई गई थी। भारतीय जाटव समाज का कहना था कि वर्तमान कार्य बुद्ध परंपरा और धम्म की गरिमा के अनुरूप नहीं है, जिससे इस स्थल की धार्मिक और सांस्कृतिक महत्ता प्रभावित हो सकती है। ज्ञापन पर त्वरित कार्रवाई करते हुए मंडलायुक्त के निर्देशानुसार नगर आयुक्त अंकित खंडेलवाल ने नगर निगम के मुख्य अभियंता को कार्य में आवश्यक सुधार करने के निर्देश दिए। साथ ही इस संबंध में भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेन्द्र सिंह को पत्र भेजकर प्रशासनिक कदमों की जानकारी भी दी गई।

इसी क्रम में नगर निगम अधिकारियों ने उपेन्द्र सिंह और भारतीय जाटव समाज के अन्य पदाधिकारियों के साथ बुद्धा पार्क का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान निर्माण कार्य की गुणवत्ता, पत्थरों के चयन और प्रतिमाओं के स्वरूप को लेकर विस्तार से चर्चा हुई तथा सुधार के महत्वपूर्ण बिंदुओं को चिन्हित किया गया।

निर्माणाधीन बुद्धा पार्क के सौंदर्यकरण कार्य को लेकर उठे सवालों के सुधार की प्रक्रिया पर प्रशासन की गंभीरता की सराहना करते हुए भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेन्द्र सिंह ने कहा कि प्रशासन की इस पहल से उम्मीद है कि बुद्धा पार्क को न केवल सौंदर्य की दृष्टि से बेहतर बनाया जाएगा, बल्कि इसे एक गरिमामय आध्यात्मिक और अंतरराष्ट्रीय पहचान देने की दिशा में भी ठोस कदम उठाए जाएंगे। इस अवसर पर आर्किटेक्ट आदित्य कुमार, सुदेश यादव, प्रो. बी.डी. शुक्ला, पातीराम सागर, आमनात इतितोचे (थाईलैंड निवासी संत), अर्जुन सिंह, ए.के. सिंह और महिपाल सिंह सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

फतेहाबाद रोड पर अधूरी सर्विस रोड बनी हादसों की वजह, ग्रामीणों, किसानों और राहगीरों की जान पर खतरा

किसान संघर्ष समिति महुआखेड़ा के नेतृत्व में किसान नेता वीरेंद्र यादव और ग्रामीणों ने मण्डलायुक्त से लगाई गुहार–दूसरी साइड की सर्विस रोड जल्द बनवाने की मांग, पर्यटकों की सुरक्षा और देश की छवि का भी मुद्दा बंद पड़ी सर्विस रोड का निर्माण जल्द से जल्द पूरा कराया जाए, ताकि दुर्घटनाओं पर रोक लगे और किसानों, ग्रामीणों, क्षेत्रवासियों एवं राहगीरों को सुरक्षित आवागमन की सुविधा मिल सके : वीरेंद्र यादव, वरिष्ठ किसान नेता

आगरा, संजय साग़र सिंह। ताजनगरी के फतेहाबाद रोड स्थित इनर रिंग रोड पर अधूरी सर्विस रोड स्थानीय ग्रामीणों, किसानों और राहगीरों के लिए गंभीर समस्या बन गई है। महुआखेड़ा क्षेत्र के ग्रामीणों, किसानों और निवासियों ने इस गंभीर मुद्दे को उठाते हुए मण्डलायुक्त से शीघ्र समाधान की मांग की है। किसान संघर्ष समिति के वरिष्ठ किसान नेता वीरेंद्र यादव और ग्रामीणों के अनुसार, इनर रिंग रोड के किनारे दोनों ओर सर्विस रोड प्रस्तावित थी, लेकिन वर्तमान में केवल एक ही साइड चालू है, जबकि दूसरी साइड बंद पड़ी है। इस कारण गांव से शहर आने-जाने वाले ग्रामीणों, किसानों और राहगीरों को मजबूरन गलत दिशा (रॉन्ग साइड) में चलना पड़ता है, जिससे आए दिन गंभीर सड़क दुर्घटनाएं हो रही हैं। कई मामलों में ग्रामीणों, किसानों और राहगीरों की जान भी जा चुकी है, और दुर्घटनाओं का दोष भी ग्रामीणों पर ही मढ़ दिया जाता है।

किसान नेता वीरेंद्र यादव ने बताया कि यह मार्ग न केवल स्थानीय ग्रामीणों, किसानों और राहगीरों बल्कि देशी-विदेशी पर्यटकों के आवागमन का भी प्रमुख रास्ता है। खराब व्यवस्था के कारण पर्यटकों को भी असुविधा होती है, जिससे देश की छवि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। किसान संघर्ष समिति और ग्रामीणों ने प्रशासन से अपील की है कि बंद पड़ी सर्विस रोड का निर्माण जल्द से जल्द पूरा कराया जाए, ताकि दुर्घटनाओं पर रोक लगे और किसानों, राहगीरों और क्षेत्रवासियों को सुरक्षित आवागमन की सुविधा मिल सके।

बरेली जयपुर एक्सप्रेसवे पर स्कूल बस में लगी

मुख्यमंत्री से की जाएगी शिकायत विनोद दीक्षित

मथुरा : बृज यातायात एवं पर्यावरण जनजागरूकता समिति के रजि उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने मथुरा जनपद में लगातार स्कूल वाहनों में हो रही घटनाओं की तीव्र शब्दों में निंदा की है। आज एक बार फिर से बरेली जयपुर एक्सप्रेसवे पर स्कूल की बस में आग लग जाने की घटना पर रोज व्यक्त करते हुए कहा है जनपद में लगातार घटना के बाद भी जिला प्रशासन नहीं उठा रहा है कोई भी कम जिससे आने वाले दिनों में घटनाएं कम हो सके कभी भी हो सकता है बड़ा हादसा जिम्मेदार लोग अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभा रहे हैं । मुख्यमंत्री से की जाएगी घटनाओं की शिकायत हर हफ्ते घटना घटित होने के बाद भी प्रशासन कोई नहीं ले रहा है सबक ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023